चालाक मछली

औरंगाबाद के करीब मछलीपुरा नाम का एक गाँव था। उस गाँव से थोड़ी दूर एक बहुत बड़ा तालाब था। गाँव के लोग खेती के अलावा मछली पकड़कर बेचने का व्यापार करते थे। उन लोगों में रहीम नाम का एक मछुआरा था। वह प्रतिदिन तालाब से मछली पकड़ता और शहर ले जाकर बेचता था। गाँव के लोग उसे बहुत ही कुशल मछुआरा मानते थे क्योंकि उसी के जाल में सबसे ज्यादा मछलियाँ फँसती थीं। रहीम को अपने इस कौशल पर बहुत बड़ा अभिमान था।

एक दिन रहीम दोपहर के बाद तालाब में मछलियाँ पकड़ने गया। उसने अपनी पत्नी से खाना बँधवा लिया और तालाब पर पहुँच गया। मछली पकड़ने के लिए उसने तालाब में अपना जाल बिछा दिया और आराम करने के लिए तालाब के किनारे लगे आम के पेड़ के नीचे जाकर लेट गया। वहाँ चल रही ठण्डी हवा ने अपना जादू दिखाया और रहीम को नींद आ गई। जैसे ही उसकी आँख खुली तब उसे एहसास हुआ कि तालाब में जाल डाले काफी लम्बा समय बीत चुका है। वह जल्दी से तालाब के पास पहुँचा और तालाब में पड़े हुए अपने जाल को तालाब के किनारे से बाहर की ओर खींचने लगा। आज उसे अपना जाल बहुत हल्का महसूस हो रहा था। वह बहुत ही आश्चर्यचकित था कि आज ऐसा क्या हुआ कि लगता है जाल में बहुत कम मछलियाँ फँसी हैं। जब जाल किनारे की ओर आया तो रहीम ने देखा उसमें उसे एक भी मछली दिखाई नहीं दी। वह बहुत ही दु:खी हो गया। जब उसकी नज़र जाल के किनारे फँसी एक सुनहरी छोटी-सी मछली की ओर गई तो वह बहुत हैरान हुआ।

जैसे ही उसने मछली को उस जाल से बाहर निकाला वैसे ही मछली ने उससे अपनी मधुर आवाज़ में कहा, रहीम तुम मुझे छोड़ दो, मैं भला तुम्हारे लिए किस काम की! रहीम ने मछली से कहा, तुम तो देखने में बहुत अच्छी हो और बोलना भी जानती हो। मैं जानता हूँ कि बाज़ार में तुम्हारे अच्छे दाम मिलेंगे। मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता। मछुआरे की बात सुनकर मछली बहुत उदास हो गई। उसने अपने मन में विचार किया कि अब रहीम के हाथों से बचने के लिए कुछ न कुछ दिमाग चलाना पड़ेगा।उसने रहीम से कहा, यदि तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें इसके बदले में बहुत सारा धन दिला सकती हूँ। यह सुनते ही रहीम के मन में कुछ लालच आ गया। वह बोला, बताओ तुम मुझे क्या दे सकती हो। मछली ने कहा कि अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें तालाब में छिपे खजाने के बारे में बता सकती हूँ। यह सुनकर रहीम का मन उस खजाने की ओर चला गया। वह बोला, क्या तुम सच कह रही हो? क्या तुम मुझे खजाना दिला सकती हूँ? मछली समझ गई थी कि अब उसकी योजना काम कर रही है। उसने रहीम से कहा कि तुम मुझे तालाब के पश्चिमी किनारे पर उतार दो क्योंकि उसी के निकट खजाना छिपा हुआ है। रहीम ने लालच में आकर जैसे ही पश्चिमी किनारे पर मछली को छोड़ा, वह गोता लगाकर पानी की गहराई की ओर जाते हुए बोली, रहीम, क्या तुम वह कहावत भूल गए कि लालच बुरी बला है। मछली ने तालाब की गहराई की ओर तैरना शुरू कर दिया और रहीम अपना सिर पकड़कर तालाब के किनारे बैठ गया।

नींव केजरीवाल
कक्षा — नवमीं

मेरे पापा

मैं बचपन से ही अपने पिता जी से बहुत प्यार करती हूँ। मैं हमेशा उनके साथ रहने का प्रयास करती हूँ। वे जहाँ भी जाते, मैं उनके साथ चल देती। मैं उनके प्रति बहुत ही निष्ठावान थी। उनकी हर कही बात मेरे लिए पत्थर की लकीर होती थी। एक दिन की बात है जब मेरे पापा कहीं बाहर गए थे। शायद नाहरलागुन गए थे और उस समय मैं सो रही थी। जब मैं सो कर उठी तब मैंने अपने पापा को नहीं देखा। मैं हर तरफ पापा-पापा बुला रही थी। पापा के न मिलने पर मैं परेशान हो गई। अब मैं पापा को ढूँढते हुए बाहर निकल आयी। जब मेरी माँ को पता चला कि मैं घर के बाहर चली आयी हूँ तो वे बहुत परेशान हो गईं।

वे घर में काम करने वाले भैया पर चिल्लाने लगीं। उन्होंने उनसे पूछा कि मधु को घर से बाहर क्यों जाने दिया। माँ को चिल्लाता देख मेरे सभी पड़ोसी आ गए। जब सबको पता चला कि मैं घर से बाहर कहीं चली गईं हूँ तो सब लोग परेशान हो गए। सबने मुझे खोजने का निर्णय लिया। माँ और मेरे पड़ोसी मुझे खोजने निकल पड़े। मेरी माँ बहुत डरी हुई थी।

माँ को लग रहा था कि मुझे किसी गुंडे ने उठा लिया है। मैं सड़क पर पापा-पापा चिल्ला रही थी। अचानक एक पड़ोसी की नज़र मुझ पर पड़ी। वे ज़ोर से चिल्लाये। मधु बेटा! उनकी आवाज़ सुनकर मैं रुक गई। तब तक माँ मेरे पास आ गईं थी। उन्होंने मुझे रोते हुए अपने गले से लगा लिया। फिर मुझ पर खूब गुस्सा हुईं। मुझसे पूछा कि मैं बाहर कैसे आ गई। यहाँ तक अकेले कैसे आ गई। मैंने माँ को बताया कि जब सुबह उठी तो मैंने पापा को नहीं देखा। मैं पापा को खोजते-खोजते यहाँ तक चली आई। माँ ने मुझे अपने सीने से लगा लिया। वे बोली कि बेटा ऐसी गलती कभी मत करना। बाहर की दुनिया बहुत खराब है। अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो हम कैसे जीते। लोग बच्चों की चोरी करके उन्हें बेच देते हैं। कुछ लोग तो बच्चों के माँ-बाप से पैसे लेने के बाद भी पकड़े जाने के डर से उन्हें मार देते हैं। इसलिए आज के बाद तुम कभी-भी अकेले घर से नहीं निकलना।

कार्पी बम
कक्षा -दसवीं

सिक्के के दो पहलू

एक बार एक कछुआ नदी के किनारे अपनी मस्ती में चल रहा था और कभी-कभी पीछे मुड़कर अपने पैरों के निशान देखकर खुश हो रहा था। इसी प्रकार वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता है और अपने पैरों के निशान देखता हुआ और खुश होता कि वह कितने सुंदर पद चिह्न छोड़ता जा रहा है। थोड़ी देर बाद नदी से एक लहर आती है और उस कछुए के पैरों के सारे निशान मिटा देती है। यह देखकर कछुए को गुस्सा आ गया और उसने नदी की लहरों से कहा ऐ लहरों ! तुम तो मुझे अपना दोस्त मानती हो तो फिर क्यों मेरे सुंदर पैरों के निशानों को मिटा रही हो ? तुम कैसी दोस्त हो मेरी ? तब लहर ने जवाब दिया, वो देखो तुम्हारे पीछे मछुवारों का झुंड आ रहा है, जो तुम्हारे पैरों के निशान देखकर ही दूसरे कछुओं को पकड़ रहे हैं। दोस्त कहीं वो मछुआरे तुम को न पकड़ लें, इसीलिए मैं तुम्हारे पैरों के निशानों को मिटा रही हूँ। दोस्तों, इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हम कई बार अपने हितैषी/सहयोगियों की बातें समझ नहीं पाते हैं और अपनी सोच के अनुसार उसे गलत समझ लेते हैं। इसलिए साथियों हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, इसलिए किसी के प्रति उसकी बातों को लेकर मन में बैर लाने से अच्छा है कि हम हर बात का सोच समझ कर मतलब निकालें और किसी से अपना रिश्ता न बिगाड़ें ।

शांभवी चौहान
कक्षा — सातवीं

मुझे अभी भी याद है।

वह एक खूबसूरत समय था जब हँसते मुस्कराते हुए अपने दादाजी के पास रहती थी। उनके साथ ही खाना, सोना, पढ़ना मोबाइल चलाना अच्छा लगता था। वे मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। माँ-पिताजी जब भी मुझे डाँटते, वे हमेशा मेरा ही पक्ष लेकर उन्हें समझाते थे। मेरे निराश होने पर मुझे खूब हँसाते थे। आखिर मैं उनकी लाड़ली थी। वे मुझे बहुत प्यार करते थे। अगर मैं उनसे कुछ भी माँगती तो वे मुझे तुरंत ला कर देते थे। वे सिर्फ़ मेरा ही नहीं वरन पूरे परिवार का ध्यान रखते थे।

मैंने अपना पूरा बचपन उनके साथ बिताया है। जब मैं बड़ी हुई तब मुझे हॉस्टल में डाल दिया गया। तब से मैं उनसे दूर हो गई हूँ। वे समय-समय पर मेरे बारे में पूछते रहते हैं। मेरे दादाजी हर समय मेरी राह देखते हैं। आज मुझे कहते हुए बड़ा दुःख हो रहा है कि वे हमारे बीच नहीं है। उनकी याद में हम आज भी रोते हैं। अब उनका महत्त्व हमारे जीवन में और बढ़ गया है। परिवार के सभी लोग जो कभी-कभी दादा जी की बातों से असहमत होते थे। वे अब उन्हें सही बताते हैं।

आज उनकी दी हुई शिक्षाएँ हम सभी को बहुत काम आ रही हैं। मन होता है कि दादाजी बार-बार मेरे सामने आ जाएँ ताकि मैं उन्हें गले लगा सकूँ, उनसे बातें कर सकूँ। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वे इतनी जल्दी हमें छोड़ कर चले जाएँगे। हम सब उन्हें बहुत याद करते हैं। जब मैं किसी बूढ़े व्यक्ति को देखती हूँ तब मुझे उनकी याद आ जाती है। मैंने अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति दादाजी और नानाजी को खो दिया है। दोनों लोग मुझे अतिप्रिय थे। दोनों लोग जाते-जाते एक महत्वपूर्ण बात सीखा गए। हमें अधिक से अधिक समय अपने परिवार वालों के साथ बिताना चाहिए ताकि हमें बाद में पछतावा न हो। अब मैं अपना अधिकांश समय अपने परिवार के साथ बिताती हूँ।

अंत में मैं यह कहना चाहती हूँ कि हम सभी को अपने परिवार के साथ अधिक से अधिक समय बिताना चाहिए। किसी व्यक्ति का महत्त्व उसके जाने के बाद ही पता चलता है।

जाह्नवी बगारिया
कक्षा - दसवीं

नारी का जीवन में महत्त्व

हर नारी में माँ है, दुर्गा है, नारी में दुनिया सारी है ,
इज्जत करना नारी की, बिन नारी दुनिया अधूरी है।

ऐसा हमेशा ही कहा जाता है कि 'नारी ही नारी की सबसे बड़ी शत्रु है।' परंतु यह कथन पूर्णतया गलत है क्योंकि जब एक लड़की छोटी से धीरे-धीरे बड़ी होती है तो उसकी जीवन से जुड़ी बहुत सारी बातों को एक माँ ही समझाती है। एक पिता तो केवल ऊपर से ही समर्थन करते हैं। इस तरह से यहाँ पर एक नारी जो कि एक माँ के रूप में है, वही दूसरी नारी जो कि एक बेटी के रूप में उसके काम आती है। अगर और देखा जाए तो जब भी किसी नारी को कुछ समस्या आती है, तो वह अपने पिता, भाई, पति या किसी भी पुरुष को बताने से हिचकिचाती है। ऐसे समय में उसकी माँ, बहन या सहेली ही उसकी समस्या को समझती हैं और उस समस्या का समाधान करती हैं और उसके मन को एक भरोसा और तसल्ली देने का काम करती हैं। अगर यहाँ हम यह बात समझें तो कहा जा सकता है कि नारी ही नारी की सबसे बड़ी शत्रु नहीं बल्कि सबसे बड़ी मित्र है। लोग अक्सर सास और बहू के धारावाहिक को देखकर यह कल्पना कर लेते हैं कि सास - बहू के बीच का रिश्ता अच्छा नहीं होता या भाभी और ननद के बीच का रिश्ता बहुत झगड़ालू होता है परंतु यह बात बिलकुल भी सही नहीं है क्योंकि सास - बहू का रिश्ता भी एक माँ बेटी के रिश्ते की तरह से ही होता है। सास भी तो कभी एक बहू थी और वह भी एक नयी बहू के दु:ख- दर्द और उसकी भावनाओं को अच्छी तरह से समझती है। उसी तरह से भाभी और ननद के रिश्ते के बारे में यदि कहा जाए तो वह भी एक बहन या सहेली के रिश्ते की तरह ही होता है। ऐसा कहना तो बिलकुल ही गलत होगा कि नारी ही नारी की सबसे बड़ी शत्रु है।

हिमांशु गोयनका
कक्षा- नवमीं

बूझो तो जानें !!

एक फूल है काले रंग का, सिर पर सदा सुहाय।
तेज धूप में खिल-खिल जाता, पर छाया में मुरझाए।

पढ़ने में, लिखने में, दोनों में ही मैं आता काम;
कलम नहीं, कागज़ नहीं, बताओ क्या है मेरा नाम ?

दोस्त

एक बार की बात है। एक छोटे से गाँव में मीरा नाम की लड़की अपनी माँ के साथ कच्चे मकान में रहती थी। मीरा की माँ लोगों के कपड़े सिलकर और घरों में बर्तन माँजकर, मीरा को स्कूल में पढ़ाती थी। मीरा स्कूल में ध्यान देकर पढ़ती थी और सबकी मदद करती थी। मीरा अपनी माँ का बहुत ख्याल रखती थी और उनकी सब बातें सुनती थी। वह कभी किसी चीज़ के लिए ज़िद नहीं करती थी क्योंकि उसे घर की सारी परेशानियाँ पता थीं। मीरा की एक सहेली थी जिसका नाम खुशी था, जोकि पास वाले शहर में रहती थी। उसने मीरा को अपने जन्मदिन पर आमंत्रित किया। खुशी के जन्मदिन का समय आ गया और मीरा अपनी माँ के साथ जन्मदिन पर पहनकर जाने वाले कपड़ों के बारे में चर्चा कर रही थी। जब मीरा जाने के लिए तैयार हो गई तब उसने अपनी सहेली को गिफ़्ट में एक कलम देने के लिए सोचा और वह बाज़ार से एक कलम लेकर आ गई और उसने बड़े प्यार से वह कलम अपनी सहेली को गिफ़्ट के रूप में दे दिया परंतु खुशी को मीरा का यह सस्ता गिफ़्ट अच्छा नहीं लग रहा था, तो उसने उसे बेमन से अपने स्कूल बैग में रख दिया और स्कूल चली गई । दूसरे दिन खुशी के स्कूल में कहानी लेखन प्रतियोगिता शुरू हुई और खुशी ने कहानी लेखन प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के विषय में सोचा और जब उसने लिखना शुरू किया तब अचानक उसकी कलम की स्याही खत्म हो गई। तभी उसे याद आया कि मीरा की दी हुई कलम तो उसके पास बैग में ही है। उसने उस कलम को निकालकर उससे फिर लिखना शुरू कर दिया। अंत में उसे इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला और तब उसे समझ में आया कि महँगे गिफ़्ट कभी भी काम नहीं आते। जो गिफ़्ट अच्छी भावना के साथ दोस्तों के द्वारा दिया जाता है, वही सबसे बड़ा गिफ़्ट होता है। खुशी अपने घर जाकर अपनी माँ को सारी बातें बताती है और यह तय करती है कि अब वह हमेशा अपने दोस्तों की इज्ज़त करेगी और उनका कभी तिरस्कार नहीं करेगी। यह बात जानकर खुशी की माँ बहुत खुश होती हैं और अपनी बेटी से कहती हैं कि आज उसने बहुत अच्छी बातें सीखीं हैं। केवल नाम खुशी होने से कुछ नहीं होता है, नाम के अनुरूप हमें सभी को खुशी देना भी चाहिए ताकि जीवन में वास्तविक खुशी आ सके। दोस्ती में कभी भी अमीरी और गरीबी नहीं देखनी चाहिए, बल्कि हमेशा अपने दोस्त की भावना को भी समझना चाहिए।

मानसूम
कक्षा - आठवीं

कविता
खंड

वर्षा रानी

शबाहत शब्बीर अंसारी
कक्षा — सातवीं

वर्षा रानी सबको भाती
हर मन को खुशियाँ दे जाती
मोर पंख फैलाकर नाचे
बादल ढोल बजाकर गाते।
घर पर चाय-पकौड़े बनते
मन में सुंदर सपने बुनते
दादा-दादी नाना-नानी सबसे
हम सब किस्से सुनते।
वर्षा के संग पवन सुहानी
पेड़ों में दिखती है जवानी
मन करता है नाचूँ-गाऊँ
बारिश में मैं धूम मचाऊँ।
वर्षा के संग चमकी बिजली
गुड़िया रानी धम से फिसली
कोयल ने भी तान सुनाई
वर्षा सब बच्चों को भाई।

हरे-भरे वृक्ष

श्रेया जैन
कक्षा - छठवीं

हे वृक्ष! तूने ही हमें सब कुछ दिया
बदले में हमसे केवल थोड़ा प्यार लिया
तूने ही साँसों के लिए ताज़ी हवा दी है
तूने ही घर के बाहर हरियाली की है।
तूने सदा हमको जीना सिखाया है
विपरीत हालातों में भी हँसकर दिखाया है
तेरे पत्तों की आवाज़ों ने संगीत सुनाया है
तेरे रंगीन फूलों ने घर आँगन महकाया है।
तेरे आँचल में पशु-पक्षियों ने बसेरे बनाए हैं
तेरे फलों के बीज़ों ने अनेक वृक्ष उगाए हैं
तुम्हें यहाँ देखकर पाँव खुद ही थम जाते हैं
तुम्हारी महानता के आगे शीश स्वयं झुक जाते हैं।

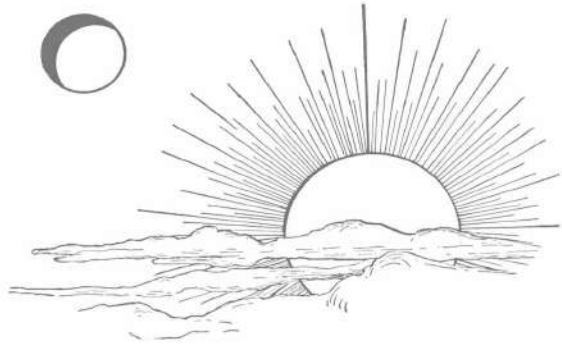

चिड़िया रानी

जिगनाशा बोरा
कक्षा — छठवीं

सुबह सबेरे घर की चौखट पर करती आवाज़
बच्चों के भोजन की खातिर वह फिरती बिंदास
यहाँ-वहाँ से दाना-दाना लेती रोज बटोर
बच्चे भी छोटी चिड़िया देख मचाते शोर।
सुंदर-सुंदर पंख सजीले खींचें अपनी ओर
चिड़िया के घर में करते हैं उसके बच्चे शोर
बच्चों के संग खेल खेलती उनको राग सिखाती
किससे डरना किससे मिलना वह सबको समझाती।
चिड़िया के आने जाने से घर में रौनक रहती
बच्चों के पालन के खातिर भरसक मेहनत करती
चिड़िया से सीखा है हमने हर पल मेहनत करना
कितनी भी हो कठिन चुनौती कभी न पीछे हटना।

आओ मिलकर चलें

यशश्री टिबरीवाल
कक्षा- ग्यारहवीं

आओ मिलकर हम हाथ बढ़ाएँ
सभी महामारी को नष्ट कराएँ ,
हौसला रखें खुद पर हम लोग
इस दुनिया को एक नई दिशा दिखाएँ ।

आओ मिलकर साथ चलें हम,
जो खो गईं हैं खुशियाँ हमारी
खा गई जिसे विकराल महामारी,
आओ मिलकर साथ चलें अब
आ गई अब खुशियों की बारी

आओ मिलकर एकता दिखाएँ
हम होंगे कामयाब ये सबको बताएँ,
एकता के सूत्र में हम बंधकर दिखाएँ
लड़कर संकट से, सबको बचाएँ

आओ मिलकर हम दीप जलाएँ
अपनी एकता का परिचय कराएँ,
महाशक्ति होने का बोध कराएँ
भारतीय होने का फर्ज़ निभाएँ ।

रिश्ते

आदित्य उपाध्याय
कक्षा — बारहवीं

रिश्ते ही तो हैं
जो सबको बाँधते हैं,
रिश्ते ही तो हैं
जिनसे हम सबको पहचानते हैं।
रिश्ते ही तो हैं
जो करीब लाते हैं,
रिश्ते ही तो हैं
जो दूरियाँ बनाते हैं।
रिश्ते ही तो हैं
जिनसे गैर भी अपने हो जाते हैं,
रिश्ते ही तो हैं
जिनसे अपने भी गैर हो जाते हैं,
रिश्ते ही तो हैं
जिन्हें बचाने को त्याग करना पड़ता है,
रिश्ते ही तो हैं
जिनके लिए दुनिया से लड़ना पड़ता है,
रिश्ते ही तो हैं
जो सम्मान दिलाते हैं,
रिश्ते ही तो हैं
जो अपमान करवाते हैं,
रिश्ते ही तो हैं
जिनमें विश्वास ज़रूरी है,
रिश्ते ही तो हैं
जिनके लिए त्याग ज़रूरी है,
जो इंसान रिश्तों की
अहमियत समझ जाता है,
वही इंसान रिश्तों को
दिल से निभाता है।

संभल जाएँ

ऋचा
कक्षा - ग्यारहवीं

कभी इन रास्तों पर
धूल उड़ा करती थी,
गाड़ियों की कतारें
शोर किया करती थीं,
जहाँ लोगों का शोर
कोलाहल मचाता था,
आज फैले सन्नाटे से
यहाँ मन घबराता है,
मन में गहरा चिंतन
उलझन बढ़ा रहा है,
खुशहाली का आलम
मुँह छिपा रहा है,
दुआ है ईश्वर से
यह स्थिति बदल जाए,
राह से भटके हुए हम
फिर से संभल जाएँ।

माँ भगवती हमें ज्ञान दे

अनिल कुमार यादव,
अध्यापक

सम्मान, स्वाभिमान दे,
माँ शारदे वरदान दे।
अर्जित करूँ धन,बुद्धि-बल
संचित करूँ सत्कर्म फल,
वंचित रहूँ अभिमान से
उत्कर्ष हो अभिज्ञान से
माँ भगवती हमें ज्ञान दे
माँ शारदे वरदान दे।
सम्मान स्वाभिमान दे
माँ शारदे वरदान दे।
खेतों में हरियाली रहे
चहुँ ओर खुशहाली रहे,
सरिता सलिल पूरित रहें
विषयुक्त ना वायु रहे।
भारत को नव उत्थान दे
माँ भगवती हमें ज्ञान दे
सम्मान, स्वाभिमान दे
माँ शारदे वरदान दे।

सब्जीवाला

आद्या रक्षित
कक्षा — सातवीं

ठेलेवाला सब्जी लेकर
घर-घर तक पहुँचाता
सब्जी ले लो, सब्जी ले लो
जोर-जोर चिल्लाता।
हरी-भरी सब्जियाँ सजाकर
सबका मन ललचाता
लाल टमाटर देख-देख कर
मुँह में पानी आता।
लाता है वह हरी तोरई
गाजर मूली लाता
बैंगन को वह बैंगुन कहता
पालक हरी दिखाता।
गली-गली में पैदल चलकर
हो जाता बदहाल
महँगाई से सब्जी का भी
आज हुआ बेहाल।
माँ कहती है सब्जी खाओ
सेहत ठीक बनाओ
सब्जी से मत बचो हमेशा
तन-मन स्वस्थ बनाओ।

धरती माँ करे पुकार

अनुष्का जितानी
कक्षा - दसवीं

धरती माँ कर रही पुकार,
अब बस करो अत्याचार
मत करो गोद सूनी मेरी,
लौटा दो वो मेरा प्यार।
छलनी हो रहे मेरे सीने में,
दे दो फिर से नई जान
मेरे ही आँचल में पलने वाले,
क्यों हो सच्चाई से अनजान।
माँ हूँ तेरी, कोई गैर नहीं,
जीवन हूँ तेरा कुछ और नहीं,
दिखती जो है थोड़ी-सी भी हरियाली,
हो जाएगी एक दिन धरती माँ की चादर काली।
खत्म हो जाएगा अंबर से पक्षियों का डेरा,
अपने प्रचण्ड पंख पसारे नभ में ,
तब फिरा लेगा रवि भी अपना बसेरा,
हमें जमीं से मत उखाड़ो रक्तस्राव से भींग गया हूँ,
रहम करो हम पर अब कुल्हाड़ी मत मारो।
इमारतों की सड़कों ने सारे,
जंगल के पेड़ पौधे निगल लिए,
फैक्ट्री कारखाने बनाकर हम समझे
हम सबसे आगे निकल गए।
ये कटते वृक्ष, ये सूखती नदियाँ,
ये सिमटते पर्वत, सूनी होती वादियाँ,
हरियाली और खुशियाँ, यूँ ही खत्म हो जाएँगे
एक वक्त बाद प्रकृति के सारे आँसू सूख जाएँगे।
यूँ ही बढ़ता रहा अगर,
पर्यावरण का विनाश,
तो हो जाएगा धरा से,
जीवन का सर्वनाश।
आओ हम लोगों में नवचेतना जगाए,
देकर नवजीवन प्रकृति को, इसका अस्तित्व बचाएँ।

मधुर बने संबंध से

अनन्या यादव
कक्षा - सातवीं

सम्बन्धों के इस जंगल में
तने वृक्ष से लोग खड़े हैं,
दिखते हैं सब निकट पड़ोसी
मिल ना पाते नियम कड़े हैं ।
स्वार्थ सिद्ध सब अपने में ही
कट जाते पर झुक ना पाते,
गिरे हुए पत्ते सम उड़ते
किन्तु प्यार के गीत ना गाते ।
जीवन की इस हरियाली में
क्यों सूखे को न्योता रहे हैं,
जड़ें जमीं में जमीं हुई हैं
इसको क्या सब भूल रहे हैं।
मधुर बने संबंध शहद से
और अबाधित अपनेपन की,
सरिता इक बहाने से जग में
प्यास बुझेगी सब जन जन की।

परेशान इंसान

चाँद कह रहा, सूरज कह रहा
यह देश भ्रष्टाचार क्यों सह रहा।
ऐसी हालत देखकर, भगवान हैरान है
नेता खुश हैं और जनता परेशान है।
अमावस-सा काला अँधेरा है,
दूर-दूर तक ना सवेरा है।
खुशी का तो नामोनिशान मिट गया
सच्चाई का तो किस्सा पिट गया।
सच बोलने से जी घबराता है,
झूठ ही मुँह से बाहर आता है।
ऐ भगवान सभी में इंसानियत तू ला दे,
पापियों के मन में सच्चाई तू जगा दे।
तभी इस संसार में रहना संभव हो पाएगा,
होगी परेशानी कम, चहुँ ओर खुशहाली छाएगी।

रास्ता खोजिए:

बिल्ली मछली खाना चाहती है, कृपया मछली तक पहुँचने का रास्ता ढूँढने में उसकी मदद करें !

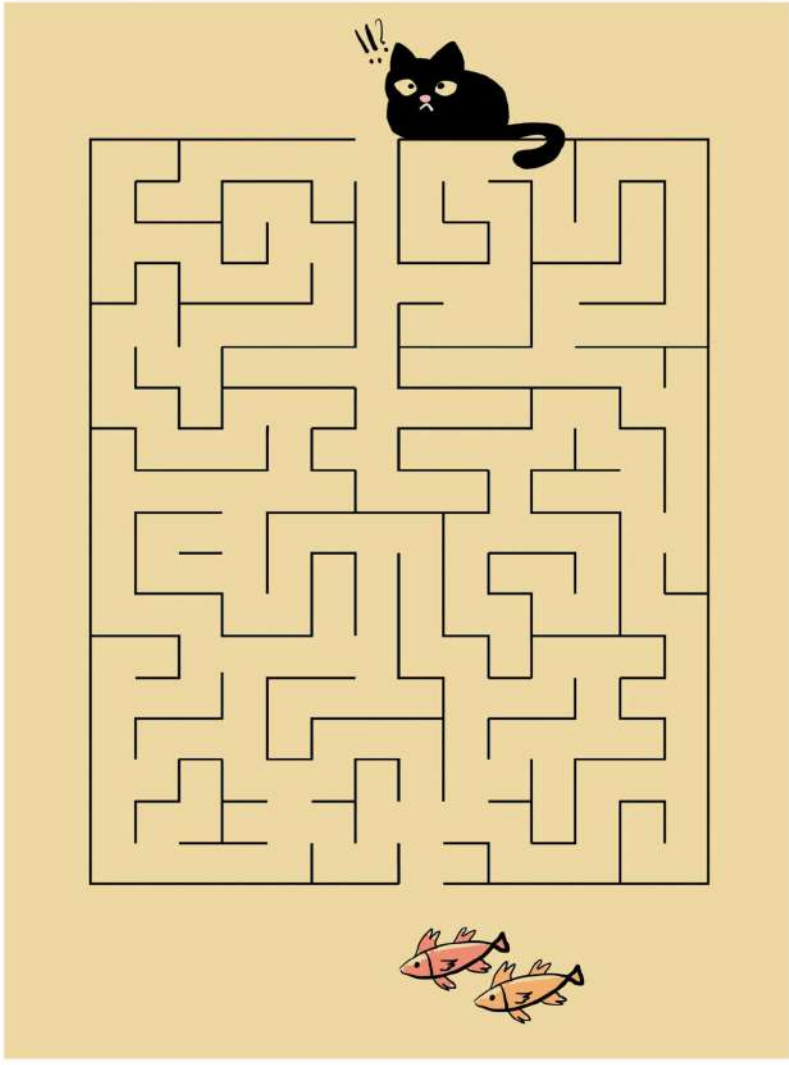

मैं नारी हूँ

ओजस्वी अग्रवाल
कक्षा - ग्यारहवीं

मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ
मैं नव निर्माण की धुरी हूँ,
धरती पर सृजन करती हूँ
मुश्किल हालातों से लड़ती हूँ।
मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ
मैं पुरवायी, मैं ज्वाला हूँ
मैं वसुधा का रूप निराला हूँ,
मैं मोम हृदया, पर बलशाली हूँ
मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ
मैं शांति गीत, मैं रणभेरी
मैं गंगा जल, मैं कावेरी
मैं क्षमाशील, मैं दुःखहारी
मैं विघ्नों से कब हारी हूँ?
मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ
मैं गरिमा हूँ, मैं आभा हूँ
मैं लज्जा हूँ, मैं करुणा हूँ
मैं सृष्टि हूँ, संघारक हूँ
मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ

हँसना मना है !!

पिताजी – पढ़ेगा नहीं तो क्या करेगा...?
बेटा – बस चलाऊँगा, फिर आम के बाग ख़रीदूँगा।
बीबी को पढ़ाऊँगा, उसे कलेक्टर बनाऊँगा,
आपके नाम पर अस्पताल खोलूँगा॥
पिताजी ने चप्पल निकाली और बोले –
तूने आज फिर से सूर्यवंशम फ़िल्म देखी है...!!!

विभागीय गतिविधियाँ

कनिष्ठ-वर्ग व्यक्तिगत भाषण एवं कविता पाठ प्रतियोगिता

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित व्यक्तिगत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन (ऑन लाइन) दिनांक 25 नवंबर 2021 को किया गया। जिसमें विद्यालय के जूनियर वर्ग के छात्र -छात्राओं ने अपनी सहभागिता की। इस प्रतियोगिता में कुल 23 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में कक्षा 5 से ख्याति बोरा ने प्रथम, नयनिका बोरा ने द्वितीय तथा आन्वी घोष एवं जिगनाशा बोरा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम में कक्षा 6 से शांभवी चौहान प्रथम, अनन्या यादव ने द्वितीय तथा डेलिशा मोदगिल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा 7 से कल्याण भराली प्रथम, तनय पंसारी द्वितीय तथा जीवितेश अग्रवाला ने तृतीय तथा कक्षा 8 से शिरीन जायसवाल प्रथम, अहोना चौधरी द्वितीय तथा बबली कनवर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कविता भावों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। यह हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। हिन्दी विभाग द्वारा दिनांक 5-3-2022 को जूनियर वर्ग व्यक्तिगत हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा 5 से 8 तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कक्षा 5 से ख्याति बोरा ने प्रथम, निशिका पटोदिया द्वितीय तथा आन्वी घोष ने तृतीय, कक्षा 6 से शबाहत शब्बीर अंसारी प्रथम, आद्रिका डे द्वितीय तथा डेलिशा मोदगिल ने तृतीय, कक्षा 7 से जीवितेश अग्रवाला प्रथम, सोहम अग्रवाल द्वितीय तथा हर्षवर्धन सिकरिया ने तृतीय, कक्षा 8 से अहोना चौधरी ने प्रथम, आदित्य अग्रवाल ने द्वितीय तथा शिरीन जायसवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अंतर सदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता-2022

इस वर्ष विद्यालय में कनिष्ठ वर्ग अंतर सदनीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 6 अप्रैल से 12 अप्रैल तक किया गया। प्रतियोगिता संवर्धित कैम्ब्रिज फॉरमेट पर आधारित रही। जिसमें सदन समूह के कुल अंकों के आधार पर प्रतियोगिता के स्थानों का निर्धारण किया गया। प्रतियोगिता का फ़ाइनल जिनारी-मानस और सुभानसिरी-नैमडैंग में हुआ। जिसमें जिनारी-मानस ने विजय प्राप्त की। इस प्रतियोगिता में उत्तम वक्ता के रूप में सुभानसिरी-नैमडैंग से स्वाधीन बनर्जी और विश्वसनीय वक्ता जिनारी-मानस से बबली कनवर रहीं। सम्पूर्ण प्रतियोगिता में जिनारी-मानस प्रथम, सुभानसिरी- नैमडैंग द्वितीय, कोपिली-धनसिरी तृतीय और भोरोली-लोहित चतुर्थ स्थान पर रहे।

वरिष्ठ वर्ग अंतर सदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन संवर्धित कैम्ब्रिज फॉरमेट पर दिनांक 11 मई से 14 मई तक किया गया। जिसमें सदन समूहों के कुल अंकों के आधार पर प्रतियोगिता में विजेताओं का निर्णय किया गया। प्रतियोगिता के चतुर्थ चक्र (फ़ाइनल) में सदनीय अंकों के जोड़ के आधार पर कोपिली-धनसिरी और जिनारी-मानस पहुँचे। जिसमें जिनारी-मानस विजेता रहा। इस चक्र में उत्तम वक्ता राघव अग्रवाल और विश्वसनीय वक्ता अनुष्का जितानी रहीं। सम्पूर्ण प्रतियोगिता में जिनारी-मानस प्रथम, कोपिली-धनसिरी द्वितीय, सुभानसिरी-नैमडैंग तृतीय और भोरोली-लोहित चतुर्थ स्थान पर रहे। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अमित जुगरान जी ने विजेता सदन (जिनारी-मानस) को 'अटल ट्राफी' प्रदान की।

हिन्दी दिवस कार्यक्रम

हिन्दी विभाग द्वारा दिनांक 14/9/22 तक विद्यालय में हिन्दी दिवस के अवसर पर एक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया । कक्षा 1 से लेकर 8 वीं तक की कक्षाओं में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कहानी वाचन, कविता पाठ, संवाद लेखन, फिल्म समीक्षा, गायन आदि प्रमुख रहा। छात्र-छात्राओं ने बड़े ही उत्साह के साथ अपनी सहभागिता सुनिश्चित की।

संजय कुमार दीक्षित
हिंदी विभागाध्यक्ष

छूकर मेरे मन को.....

आज जब कभी भी मैं अपनी दि असम वैली स्कूल की शैक्षणिक यात्रा के बारे में विचार करता हूँ तो मुझे याद आ जाता है कि मैंने वर्ष *2016* में इस विद्यालय में कक्षा *6* में प्रवेश लिया था। उस समय मुझे मानस सदन में रहने का सुअवसर दिया गया। श्रीमान शब्बीर अंसारी जी हमारे कनिष्ठ सदन के सदनाध्यक्ष थे। मेरे ट्यूटर श्रीमान चिन्मय जी थे। अंसारी जी हम सभी बच्चों को बहुत प्यार करते थे और खासकर नए बच्चों को अपने से जोड़कर रखते थे जिससे कि वे जल्दी ही विद्यालय के वातावरण के साथ खुद को मिला सकें। विद्यालय आने के कुछ दिनों तक मैं भी घर की बहुत याद करता रहा, समय-समय पर दु:खी हो जाता था लेकिन विद्यालय के हरे-भरे, आकर्षक और विशालकाय प्रांगण ने बहुत ही जल्दी मुझे अपना बना लिया। मेरे फूफा जी ने मेरे पिताजी को इस विद्यालय के बारे में बताया था और जब पिताजी ने विद्यालय के विषय में जानकारी जुटायी तो वे भी इसकी सुख-सुविधाएँ एवं बच्चों के विकास के अवसरों को जानकर मोहित हो गए थे।

जूनियर स्कूल में मैंने बहुत सारे मित्र बनाए। मुझे विद्यालय में पढ़ने, खेलने-कूदने और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने के बाद समय का पता ही नहीं चलता था। सीनियर स्कूल में पहुँचने के बाद मित्रता मेरी पहचान बन गई और मित्र मेरे जीवन का अभिन्न अंग। क्रिस्तानू, सैरोन, लक्ष्य, युवराज और आर्यन मेरे अभिन्न मित्र बने जिनके साथ खुशी-खुशी मैं अपने सुख-दु:ख बाँटता हूँ जबकि मेरी कक्षा के अन्य सभी साथी भी मेरे बेहद करीब ही हैं। स्क्वॉश और घुड़सवारी कक्षा *6* तक मेरे प्रिय खेल थे जबकि आज मैं फुटबॉल, बास्केटबॉल, बैडमिंटन आदि सभी खेलों का जमकर आनंद लेता हूँ।

दि असम वैली स्कूल विद्यार्थियों के लिए सुनहरे अवसरों का भंडार है। मैंने भी विद्यालय में दिए जाने वाले इन अवसरों का लाभ उठाते हुए अंतर्विद्यालयीय, अंतर्सदनीय एवं आई.पी.एस.सी. समेत अनेक स्क्वॉश, बैडमिंटन, बास्केटबॉल प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अनेक पुरस्कार जीते और अपने विद्यालय के लिए नाम कमाया। आज विद्यालय में मेरी अपनी पहचान एक अच्छे और प्रतिभावान खिलाड़ी के रूप में है।

इन दिनों मैं पूरा ध्यान अपनी शिक्षा पर भी दे रहा हूँ जिससे आने वाले समय में मैं अच्छे अंक लाकर अपनी इच्छानुसार एक अच्छे कॉलेज का चुनाव कर सकूँ। मेरा विद्यालय भी समय-समय पर कैरियर संबंधी जानकारियाँ देकर इस काम में मेरी भरसक मदद कर रहा है। अन्य विद्यार्थियों की तरह मेरा समय भी विद्यालय में उतार-चढ़ाव से भरपूर रहा लेकिन मैं उन सभी गुरुजनों और साथियों का धन्यवाद देना चाहूँगा कि जिनके सहयोग से मैं अपने आपको इस योग्य बना सकूँ कि हर स्थिति का निर्भीकतापूर्वक सामना कर सकूँ। मैं अपने छोटे साथियों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि आप सभी को अपने सीनियर्स से खेल के हुनर और शैक्षणिक यात्रा के कौशल को सीखते हुए अपना सर्वांगीण विकास करना चाहिए। मैं यह भी चाहता हूँ कि जिस प्रकार मेरा विद्यालय मेरे साथियों को आगामी भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार कर उन्हें एक ज़िम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में काम कर रहा है, वह कार्य अनवरत रूप से चलता रहे। अंत में मैं अपने सभी गुरुजनों, साथियों और माता-पिता को धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने सदैव ही मेरा मार्गदर्शन करते हुए मेरी सफलता की कामना की है।

कृष्णव कनोरिया
कक्षा — बारहवीं

"प्रतिभावान खिलाड़ी, हास्य-विनोद से परिपूर्ण, कुशल नेतृत्व एवं ज़िम्मेदारी के प्रति समर्पित तथा निष्ठावान विद्यार्थी।"
-डॉ. राजेश कुमार मिश्र, हिंदी अध्यापक

शिक्षा जीवन के समुचित विकास के लिए सबसे अचूक अस्त्र है। शिक्षा के द्वारा ही हम सच्चे अर्थों में इंसान कहलाने योग्य बनते हैं। यथोचित शिक्षा पाने के लिए इंसान न जाने कहाँ-कहाँ भटकता है और यह परम्परा आज की नहीं बल्कि सदियों पुरानी है। मेरा मानना है कि शिक्षा जहाँ से भी मिले उसे तत्काल ग्रहण कर लेना चाहिए। कक्षा *4* उत्तीर्ण कर लेने के बाद मेरे पिताजी ने मामा जी के कहने पर मेरा दाखिला दि असम वैली स्कूल में करा दिया। विद्यालय के शुरूआती दिनों में मैं बहुत ही घर के लगाव के कारण अनमना रहा लेकिन समय के साथ-साथ मैं विद्यालय के क्रियाकलापों में रमता चला गया। मेरे साथ ही मेरे दूर के एक मौसेरे भाई ने भी इस विद्यालय में प्रवेश लिया था परंतु वह अपने आप को यहाँ के वातावरण में ढाल ही न सका और घर के मोहजाल में फँसा रहा जिसके परिणामस्वरूप वह विद्यालय से चला गया। विद्यालय के शुरूआती दिनों में मुस्ताकुल नाम के मेरे साथी ने मुझे विद्यालय के साथ घुलने-मिलने में मेरी बहुत सहायता की।

विद्यालय में प्रवेश के समय मेरे सदन की सदनाध्यक्षा श्रीमती नवनीता कौर जस्सल थीं। कुछ ही दिनों बाद मैं भी विद्यालय की गतिविधियों में व्यस्त हो गया और घर के प्रति मेरी उत्सुकता कम होती चली गई। मेरे साथियों और गुरूजनों के असीम प्यार के कारण यह मुझे अपना दूसरा घर महसूस होने लगा। मैं इस बात का पूरा श्रेय अपने साथियों और विद्यालय को देना चाहूँगा जिन्होंने मुझे यथाशीघ्र अपने परिवार का एक अहम हिस्सा बना लिया। समय बीतने के साथ मेरे अनेक दोस्त बनते चले गए और मैंने भी अपने आपको भविष्य निर्माण के प्रति समर्पित कर दिया।

दि असम वैली स्कूल में आयोजित होने वाले अनेक खेलों में मैंने *2015* में क्रिकेट को चुना और इस खेल के मुख्य प्रबंधक श्रीमान राजेन्द्र सिंह चौहान जी के दिशा-निर्देशन एवं सहयोग से इस खेल में आगे ही बढ़ता गया। वर्ष *2016* में आयोजित अंतर-सदनीय क्रिकेट प्रतियोगिता में मैं एक ही ओवर में चार विकेट लेकर सबसे बेहतरीन गेंदबाज़ बनकर उभरा। इसके बाद मेरे सामने अनेक क्रिकेट प्रतियोगिताओं की झड़ी-सी लग गई। मैंने अंतर-सदनीय, अंतर-विद्यालयीय समेत आई.पी.एस.सी. जैसी प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन किया। मैं इसके लिए अपने विद्यालय को ही धन्यवाद देना चाहूँगा कि जिसकी बदौलत मुझे मेरी कल्पनाओं से भी परे गुवाहाटी के वर्षापारा स्टेडियम में भी क्रिकेट प्रतियोगिता में खेलने का सुअवसर मिला। सांस्कृतिक गतिविधियों के अंतर्गत मैंने हिंदी नाटक मंच को चुना तथा स्थापना दिवस पर नाटक करने के साथ-साथ अनेक नुक्कड़ नाटकों में अभिनय करने के अलावा हिंदी नाटक को निर्देशित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

मैं बहुत ही खुश हूँ कि मेरे विद्यालय ने मुझे वह सब कुछ दिया जो एक विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए अपेक्षित है। मैं खेलकूद के साथ-साथ विद्यालय की रचनात्मक गतिविधियों में भी सक्रिय भूमिका निभाकर बहुत कुछ सीखा। कक्षा दसवीं की बोर्ड परीक्षा में मैंने लगभग *93* प्रतिशत अंक प्राप्त किए। मैं और मेरा परिवार विद्यालय के इस सहयोग एवं दिशा-निर्देशन के लिए हमेशा ऋणी रहेगा। मैं अपने विद्यालयीय अनुजों को यही कहना चाहता हूँ कि हमें जमकर विद्यालय के द्वारा दिए जाने वाले सुअवसरों का लाभ उठाकर अपना बहुमुखी विकास करना चाहिए। मैं ईश्वर से यही कामना करूँगा कि मेरा विद्यालय दिनोंदिन विकास की ओर बढ़कर अच्छे नागरिकों को तैयार करके देश के विकास में अपना योगदान देता रहे।

विनायक कण्डोई
कक्षा — बारहवीं (विद्यालय क्रिकेट कप्तान)

"सौम्यता से परिपूर्ण, भावुक, चिंतनशील, अनुशासित, कुशल खिलाड़ी, अन्वेषक, हँसमुख-विनोदी, आज्ञाकारी, सुशील, निष्ठावान, चरित्रवान एवं विवेकशील विद्यार्थी।"
-श्रीमान प्रेम कुमार सिंह, हिंदी अध्यापक

एक नए स्कूल की यात्रा शुरू करना कठिन हो सकता है लेकिन यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसे कितनी खूबसूरती से एक अच्छा और निर्णायक मोड़ दे सकते हैं। मैंने भी अक्टूबर, *2021* में दि असम वैली स्कूल में प्रवेश लिया। आमतौर पर लोग जब किसी नई जगह पर जाते हैं तो कई तरह की भावनाओं को महसूस करते हैं, लेकिन हैरानी की बात यह है कि मुझे बिल्कुल भी घबराहट नहीं हुई। शुरुआत में, मैं नए दोस्त बनाने और नई चीजें सीखने और नए अनुभवों का आनंद लेने के लिए बहुत उत्साहित थी। कक्षा ग्यारहवीं में प्रवेश लेने के कारण भले ही मैंने ए.वी.एस. में अधिक समय नहीं बिताया पर इतना अवश्य है कि पहली बार मैं इतने दिनों के लिए अपने घर और घरवालों से दूर हुई हूँ। आवासीय विद्यालय की सुंदरता यही है कि यहाँ आपकी मुलाकात देश के अलग-अलग क्षेत्रों से आए हुए विद्यार्थियों से होती है जो आपके व्यक्तित्व विकास में बहुत सहायक बनती है। मुझे भी यहाँ आकर चाहे-अनचाहे अनेक लोगों से बातें करनी पड़ीं जिसने मेरी वक्तव्य शैली में निखार किया और अनेक मित्र बनाने का सुअवसर दिया। मैंने अपने मित्रों से आवासीय विद्यालय में आने वाली चुनौतियों और उन चुनौतियों से निपटने के तरीके भी सीखे। मेरी आवश्यकताओं ने मुझे दूसरों से बातचीत करने तथा सहयोग लेने के लिए प्रेरित किया जिसके कारण मुझमें वाक्-कौशल का अभ्युदय हुआ। जब हम दूसरों से अपनी बात स्वीकार कराने के लिए अनेक यथोचित दलीलें देते हैं, उससे हमारे अंदर तर्क शक्ति का विकास होता है।

मैंने अपने छात्रावास के जीवन से, आवंटित समय के दौरान अपने गृहकार्य के प्रबंधन के लिए सीखने से लेकर पहली बार कपड़े धोने तक आत्म-निर्भरता सीखी और आत्म-निर्भरता से आत्मविश्वास का जन्म हुआ। मेरा मानना है कि मैं जिस प्रकार यहाँ अनेक प्रकार की ज़िम्मेदारियों का निर्वहन कर रही हूँ, यही कर्मनिष्ठा मेरे आने वाले समय में मेरे लिए वरदान सिद्ध होगी।

मित्रता आवासीय संस्थान का सबसे बड़ा वरदान है। यहाँ रहकर हर विद्यार्थी मित्रता के अटूट बंधन में बँध जाता है और यही मित्रता आपके जीवन में एक अहम् भूमिका निभाती है। प्रवेश लेने से पहले मुझे मेरे संबंधियों और मित्रों ने यही बताया था कि ए.वी.एस. एक वंडरलैंड है जिसमें हर कदम पर एक नया रोमांच छिपा हुआ है। मैंने भी हमेशा यही कोशिश की है कि मैं यहाँ मिलने वाली समस्त संभावनाओं का भरपूर लाभ उठाकर अपने जीवन को सफल एवं लाभान्वित कर सकूँ। अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि ए.वी.एस. के सफ़र में आप जितने भी अवसरों का लाभ उठा सकें वह आपके आगामी भविष्य के लिए लाभप्रद होगा। मैं अपने गुरुजनों और मित्रों का उनके सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद देती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि आने वाले समय में भी मेरा विद्यालय इसी प्रकार विद्यार्थियों को निखारने एवं उन्हें एक सुयोग्य नागारिक बनाने की दिशा में अपना यह प्रयास जारी रखेगा।

वर्षा गोयल
कक्षा - बारहवीं

"सौम्यतापूर्ण, प्रतिभाशाली, कर्मठ, साहसी, भावुक, आज्ञाकारिणी एवं कार्यकुशल होने के साथ-साथ नेतृत्व क्षमता से युक्त विद्यार्थी।"
-श्रीमान संजय कुमार दीक्षित, हिंदी विभागाध्यक्ष

मेरे पिताजी ने उड़ीसा में रहने के बाद भी मेरे बड़े भाई की अच्छी शिक्षा के लिए संपूर्ण भारत के अच्छे से अच्छे विद्यालयों की खोजबीन करनी शुरू कर दी। काफी विचार-विमर्श के बाद उन्होंने भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित दि असम वैली स्कूल का चुनाव किया क्योंकि इस आवासीय विद्यालय में उन्हें वे सारी खूबियाँ दिखाई दीं जो उन्हें मेरे भाई के सर्वांगीण विकास के लिए चाहिए थीं। वर्ष *2012* को उन्होंने मेरे बड़े भाई का दाखिला इस विद्यालय में करा दिया। मेरे भाई के इस विद्यालय में आने का एक और कारण भी था जिसे केवल हम लोग ही जानते हैं। मेरे पिताजी जी के वरिष्ठ सहपाठी इस विद्यालय के प्रधानाचार्य थे और उनसे प्रभावित होने के कारण ही मेरे बड़े भाई का इस विद्यालय में दाखिला कराया गया। कक्षा सातवीं में प्रवेश लेने के बाद उनका कुछ समय संघर्ष से भरा रहा और अच्छी तरह रच-बस जाने के बाद उन्होंने विद्यालय में अपनी मेहनत से एक खास पहचान बनाई। विद्यालय में उन्होंने एकेडमिक कैप्टन के रूप में अत्यंत सराहनीय कार्य करते हुए विद्यार्थियों में एक प्रशंसनीय स्थान प्राप्त किया।

बड़े भाई के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास को देखकर पिताजी ने मुझे भी कक्षा सातवीं में इसी विद्यालय में दाखिला दिला दिया। सभी शिक्षकों में मेरे भाई के लिए बेहद सम्मान दिखाई दिया जिसके कारण मुझ पर भी अच्छा बनने का दबाव हमेशा बना रहा। अंततः मैंने भी दिन-रात मेहनत करके विद्यालय में अपना अलग स्थान बनाया। शिक्षा के प्रति मेरी रुचि देखकर मुझे भी विद्यालय ने एकेडमिक कैप्टन के रूप में कार्य करने का अवसर दिया जिसे मैंने पूर्ण लगन एवं निष्ठा के साथ संपन्न किया। जैसे-जैसे विद्यालय से मेरे जाने का समय निकट आ रहा है वैसे-वैसे मैं बहुत अधिक भाव-विभोर होने का अनुभव कर रहा हूँ। विद्यालय ने मुझे अपने व्यक्तित्व विकास के लिए हर सुविधा प्रदान की है जिसके कारण ही मैं अपने आपको आज अधिक विश्वास से भरा महसूस कर रहा हूँ। मैं यही कामना करता हूँ कि मेरा विद्यालय दिन-प्रतिदिन इसी प्रकार उन्नति की ओर अग्रसर होता रहे।

श्रीवंश अग्रवाल
कक्षा — बारहवीं

"प्रतिभावान, चरित्रवान, कार्यकुशल, चिंतनशील, विश्वसनीय, कर्मठ, सौम्यता से अभिभूत एवं कनिष्ठ-वर्ग के विद्यार्थियों का मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत।"
-श्रीमान अनिल कुमार यादव, हिंदी अध्यापक

नीचे दिए गए चित्रों में अंतर खोजिए :

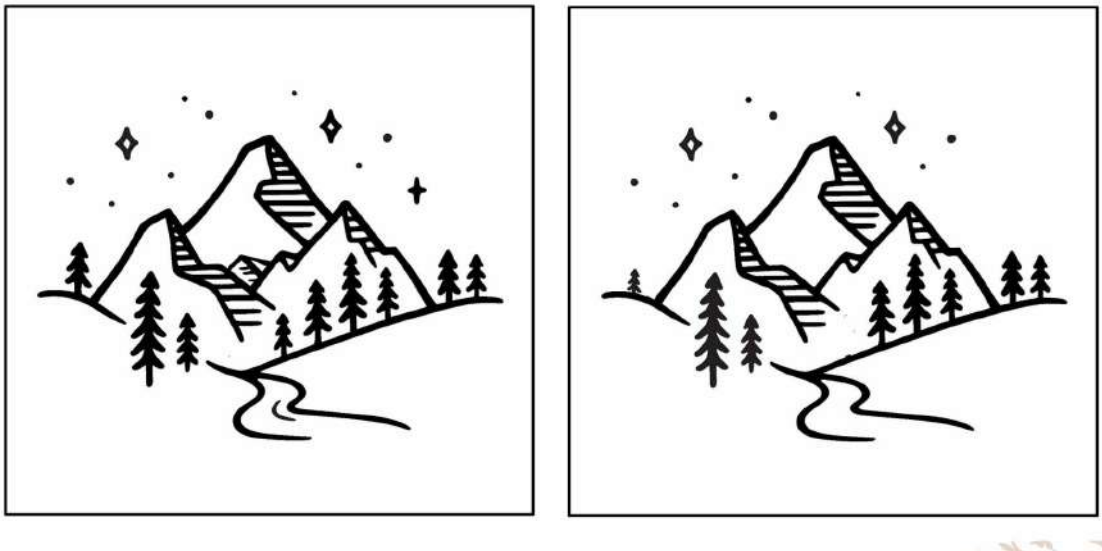

बूझो तो जानें

- एक छोटा सा बंदर, जो चले पानी के अंदर।

- बीमार नहीं रहती, फिर भी खाती हूँ गोली।
  बच्चे, बूढ़े डर जाते हैं, सुनकर इसकी बोली।

- थल में पकड़े पैर तुम्हारे, जल में पकड़े हाथ,
  मुर्दा होकर भी रहता है, जिंदों के ही साथ।

- एक नारी के दो बालक, दोनों एक ही रंग,
  पहला चले, दूसरा सोवे, फिर भी दोनों संग।

- गर्मी में जिससे हैं हम घबराते, जाड़े में हैं हम उसी को खाते,
  उससे है प्रत्येक चीज चमकती, दुनिया उससे खूब दमकती।

- सोने को पलंग नहीं, न ही महल बनाए,
  एक रुपैया पास नहीं, फिर भी राजा कहलाए।

- एक साथ आए दो भाई, बिन उनके दूर शहनाई,
  पीटो तब वह देते संगत, फिर आए महफ़िल में रंगत ?

- रोज शाम को आती हूँ, मैं रोज सवेरे जाती हूँ,
  नींद ना मुझको कभी समझना, यद्यपि तुम्हें सुलाती हूँ।

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक	: आदित्य कुमार उपाध्याय
सहायक संपादिका	: अवन्या जसरासरिया
सहायक संपादक	: विनायक कुमार कण्डोई
सहायक संपादिका	: ध्वनि देवरा
चित्रांकन	: आदित्य राज सरकार
मार्गदर्शक	: हिंदी विभाग
प्रकाशन सहायता सामग्री	: कैन्वा डॉट कॉम

ষষ্ঠদশ সংখ্যা

জাগৰণ

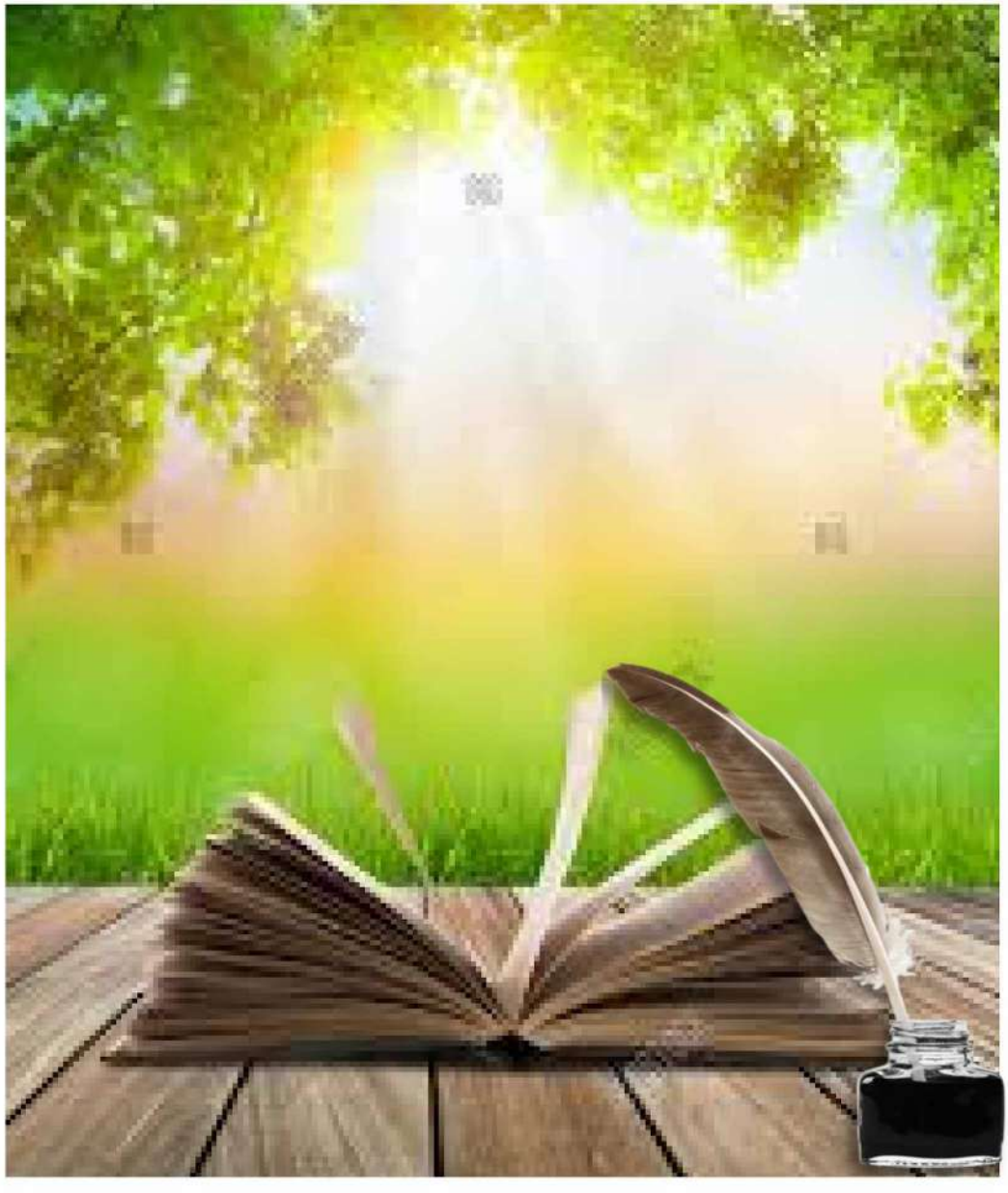

জাগৰণ -২০২২

জাগৰণ

বার্ষিক পত্রিকা-২০২২

প্রকাশক

দ্য অসম ভেলী স্কুল

পৰিকল্পনা

অসমীয়া বিভাগ

সম্পাদনা

কৃতার্থ কৌশিক

আত্রেয়ী নেওগ

তত্বাৱধায়িকা

ড° পৰিণীতা গোস্বামী

প্রার্থনা বৰা ফুকন

সূচীপত্র

শিৰোণাম	পৃষ্ঠা সংখ্যা
১) ঋতু	১
২) আপদীয়া পদ্য	১
৩) পাহাৰৰ সিপাৰৰ মোৰ মনৰ বন্ধুজন	২
৪) অসমীয়া কৃষ্টি–সংস্কৃতি	৩
৫) পূজাৰ অনুভৱ	৪
৬) গৰমৰ বন্ধ	৫
৭) পখিলা	৫
৮) অবুজন মই	৬
৯) মিৰি জীয়ৰী	৭
১০) শ্বিলঙলৈ গৈছিলো	৭
১১) ৰেলযাত্রা	৮
১২) শৰত কাল	৮
১২) মোৰ এখন প্রিয় গ্রন্থ	৯
১৩) এটা স্মৰণীয় দিন	১০
১৪) অনুভৱ	১১
১৫) চাকৰি	১২

ঋতু

তাচমিন য়ুছৰা আহমেদ
দশম শ্ৰেণী

হীন দেৰি নকৰে ঋতুৱে
খিৰিকিৰ কাষত
সময়মতেই আহি ৰৈ থাকে
কোমল সেউজ পাত।
বৰষুণৰ ৰিমজিম
জুৰ মলয়া
নিয়ৰৰ টোপাল
সকলো ঋতুক যেন সামৰি ৰাখিম।
গুলপীয়া ডাৱৰবোৰ যেন
আজুৰি আনি সাঁচি ৰাখিম
ঋতু সময়ৰো
ঋতু জীৱনৰো
সলনি হয় ঋতু
নতুন সাজেৰে
নতুন সাহেৰে।

আপদীয়া পদ্য

প্ৰাঞ্জল শইকীয়া
শিক্ষক, (সংগীত বিভাগ)

(১)
চুলিৰ আগত জীৱ লৈ যাৱনো কলৈ,ভাৰি
চাবি মা-দেউতা আছে তোলৈ ৰৈ
নকৰিবি বেছি খৰধৰ
জীৱনটো উপভোগ কৰ।
এবাৰ হেৰালে নাপাবি চিৰদিনলৈ

(২)
দূৰন্ত গতিবেগ তঁহতৰ ৰুধিব কোনে ?
তঁহতৰ ব্যৱহাৰ সকলোৱে জানে
দিবি জানো সন্মান ?
কৰিবিহে অপমান
তাতোকৈ থকাই ভাল মনে মনে।

(৩)
কিয়নো ইঁহতৰ বাৰু ইমান লৰালৰি
এনে লাগে হস্পিতালত আছে বেমাৰী।
নামানে গুৰু গোঁসাই,
নিয়ে মাথো মহতিয়াই।
পুলিচৰ চকুতো সিঁহতে যায় ধূলি মাৰি।

(৪)
পাইছনে কেতিয়াবা টকা পইচা ঘটি
দেউতা�ৰৰ চকাৰেই খাইছ বহি বহি
খুজিলেই টকা পাই,
নিদিলেই ৰক্ষা নাই
নহ'লে পাৰিবি গালি অবাইছ মাত মাতি।

(৫)
নিজে ভালকৈ চলালেও একো লাভ নাই,
ক'ৰবাৰপৰা হঠাত আহি দিব খুন্দিয়াই,
ডাঙৰ মানুহৰ ল'ৰা,
একো ক'ব নোৱাৰা
ওলোটাই তোমাক হে যাব দোষী সজাই।

পাহাৰৰ সিপাৰৰ মোৰ মনৰ বন্ধুজন

মই বৰ ভাবুক বুলি মোৰ দেউতাই সদায় কয়। কম কথা কও, মানুহৰ লগত থাকি বৰ ভাল নাপাও। আমাৰ ঘৰটো পাহাৰখনৰ ঠিক ওচৰতেই। ঘৰৰ পিছফালে বাৰাণ্ডা এখন আছে। মই প্ৰায়ে ৰাতিপুৱা আৰু গধূলি বাৰাণ্ডাখনত বহো। বাৰাণ্ডাত বহি মই যেন নিজেই নিজৰ মাজত হেৰাই যাও। দূৰৰ সেই নীলা পাহাৰখনে যেন মোক চিঞৰি চিঞৰি মাতে । মোক যেন পাহাৰখনে কিবা এটা ক'ব। মাজে সময়ে পাহাৰৰ সিটো পাৰৰ পৰা যেন কিবা এটাই মোৰ পিনে চাই থাকে তেনে লাগে। ৰাতিপুৱা কেতিয়াবা পাহাৰখন কুঁৱলীয়ে ঢাকি ৰাখে। তেতিয়া যেন পাহাৰখনক মই চকামকাকৈ দেখো। শুকুলা ডাৱৰৰ মাজেৰে সূর্যৰ কিৰণটো আহি যেতিয়া মোৰ মুখত পৰে তেতিয়া মই যেন ভাৱ সাগৰত উটি ভাহি যাওঁ। মোৰ এনে লাগে যেন পাহাৰৰ সিটো পাৰে কোনোবা আছে। যিয়ে চৰাইৰ মাত হৈ, কুঁৱলীৰ ৰূপ লৈ শুকুলা মেঘৰ আকাৰ লৈ মোক মাতে। মোৰ লগত সংযোগ স্থাপন কৰিব বিচাৰে। মাজে মাজে মোৰ এনেকুৱা লাগে যেন পাহাৰৰ সিটো পাৰ চাবলৈ মোৰ মনটো উত্ৰাৱল হৈছে। মোৰ বুকুখন কিবা খালি লাগে। এনে লাগে যেন মই চৰাই এটি হৈ উৰি ফুৰিম আৰু সময় সুবিধা বুজি পাহাৰৰ সেইটো পাৰে গুচি যাম। আৰু তাতেই বিচাৰি পাম মোৰ প্ৰাণৰ কোনোবা বন্ধুক, তেওঁলোকৰ পৰিয়ালক। যিজন বন্ধুৰ চৰিত্ৰত থাকিব সৰলতা আৰু শলীনতা। পাহাৰৰ মোৰ ফালে থকা মানুহখিনিৰ কথাও মই ক'ম। ক'ম মই তেওঁলোকৰ ব্যস্ততাৰ কথা। হেৰাই যাব ধৰা তেওঁলোকৰ সৰলতা আৰু শালীনতাৰ কথা। কথাই কথাই বাঢ়ি অহা উশৃংখলতাৰ কথা, অসহিষ্ণুতাৰকথা।

সেই বন্ধুৰ লগত মই মোৰ সকলো বাঙ্কোন খুলি প্ৰাণখুলি হাঁহিম, কথা পাতিম, খেলিম আৰু কত যে কি নকৰিম।

(গুৱাহাটীৰ মাৰিয়া পাব্লিক স্কুলৰ দ্বাৰা সদৌ অসম ভিত্তিত আয়োজিত মফিজুদ্দিন আহমেদ হাজৰিকা সোঁৱৰণি অসমীয়া সৃজনীমূলক ৰচনা প্ৰতিযোগিতাৰ তৃতীয় পুৰস্কাৰপ্ৰাপ্ত প্ৰবন্ধ)

অসমীয়া কৃষ্টি-সংস্কৃতি

ডেনিজা চাংমাই
নৱম শ্রেণী

এদিন দেউতা তেওঁৰ লগৰ বন্ধু এজনৰ ঘৰলৈ যাবলৈ আমাক লগ ধৰিলে। ফুৰিবলৈ লগ ধৰাৰ কাৰণে মোৰো মনটোত আনন্দেৰে নধৰা হ'ল। মই মা আৰু দেউতাৰ লগত ফুৰিবলৈ ওলালো। গৈ থাকোতে ৰাষ্টাৰ দুয়োকাষৰ মনোমোহা প্ৰাকৃতিক দৃশ্য দেখি মোৰ মনটো উত্‌ফুল্লিত হৈ পৰিল। প্ৰায় এঘণ্টামান সময়ৰ মূৰত গৈ পালোগৈ তেওঁলোকৰ ঘৰ। আমাক দেখাৰ লগে লগে বৰ আদৰ-সাদৰেৰে সম্ভাষণ জনালে। বৰ সুন্দৰকৈ চাহ-জলপানেৰে আমাক আপ্যায়িত কৰিলে। কথা-বতৰাৰ মাজেৰে গম পালো যে তেওঁলোকৰ ঘৰখনৰ সকলোৰে সংগীতৰ প্ৰতি নিচা আছে আৰু সংগীত চৰ্চা কৰা এটা পৰিবেশ আছে। ঘৰখনৰ প্ৰতিজন সদস্যই অসমীয়া ভাষা-সংস্কৃতিক খুব সন্মান কৰে আৰু অসমীয়া গীত – মাতৰ খুব সুন্দৰকৈ চৰ্চা কৰে। তেওঁলোকৰ ঘৰৰ প্ৰায় প্ৰতিজন সদস্যই আধুনিক গীত, বনগীত, বৰগীত, বিহুগীত আদিকে ধৰি বহুতো গীত গাই শুনালে। তেওঁলোকৰ গীতসমূহ শুনি মনটো খুব ভাল লাগিল। তেওঁলোকৰ ঘৰখনৰ সকলোৱে যে কৃষ্টি-সংস্কৃতি সুন্দৰকৈ জীয়াই ৰাখিব পাৰিছে তাকে ভাবি আচৰিত হ'লো। সৰুৰ পৰা বয়স্কজনলৈ আটায়ে খুব সুন্দৰকৈ গীত-মাত পৰিবেশন কৰি আমাক আপ্লুত কৰি তুলিলে। ভাবিলে আচৰিত লাগে যে আজি-কালিও ইমান সুন্দৰ সংস্কৃতিৱান লোক থাকিব পাৰে। কিয়নো আমি এই আধুনিকতাৰ জালত আৱদ্ধ হৈ নিজেও অসমীয়া গীত-মাত চৰ্চা কৰিবলৈ মন নেমেলো। ফলত লাহে লাহে আনাৰ নতুন প্ৰজন্মই নিজৰ ভাষাটোকে চিনি নোপোৱা হৈছে।

তেওঁলোকে মোক যেতিয়া এটি অসমীয়া গীত গাবলৈ ক'লে মই বৰকৈ লাজ পালো। কিয়নো মইতো আজিলৈ কোনো অসমীয়া গান গাবলৈ শিকা নাই। মই অসমীয়া গানবোৰ একাষৰীয়া কৰি অকল হিন্দী আৰু ইংৰাজী গানেই শুনো। মই ঘৰলৈ আহি সিদ্ধান্ত ল'লো যে আজিৰ পৰা হিন্দী আৰু ইংৰাজী গানৰ বাহিৰেও আমাৰ নিজৰ অসমীয়া কৃষ্টি-সংস্কৃতি, গীত-মাতৰো চৰ্চা কৰিম। মই নিজেতো অসমীয়া গীত-মাত শিকিমেই লগতে মোৰ ওচৰ চুবুৰীয়া লগৰীয়াসকলকো শিকিবলৈ প্ৰেৰণা যোগাম।

আমি সকলোৱে মিলি সপ্তাহত দুদিন হলেও অভিজ্ঞ শিক্ষকৰ পৰা অসমীয়া গীত-মাত শিকিম বুলি সিদ্ধান্ত লৈছো। আমাৰ নিজৰ কৃষ্টি -সংস্কৃতি, গীত- মাতসমূহ আমি নতুন প্ৰজন্মই ৰক্ষা নকৰিলে পিছলৈ আমাৰ ভৰি তলৰ মাটি টুকুৰাও এদিন নাইকিয়া হ'বগৈ। সেয়েহে মই সিদ্ধান্ত ল'লো যে মই অসমীয়া গীত- মাতসমূহ খুব সুন্দৰকৈ আয়ত্ত্ব কৰিবলৈ চেষ্টা কৰিম।

পূজাৰ অনুভৱ

কৃতার্থ কৌশিক
দশম শ্রেণী

শৰত কাল মই বৰ ভাল পাওঁ। কিয়নো শৰতকাল মানেই পুজা। পূজা মানেই আনন্দ, পূজা মানেই ফূর্তি। আচলতে বিশ্বকর্মাৰ পূজাৰ পৰাই আৰম্ভ হৈ যায় পূজা পূজা লগা অনুভৱ। আকাশৰ বগা বগা ডাৱৰ , তল সৰা শেৱালীৰ গোন্ধ, কহুঁৱা ফুল , বননিত নিয়ৰৰ টোপালবোৰ মুকুতাৰ দৰে জিলিকে। বিশ্বকর্মা পূজাৰ বুন্দিয়া -ভুজিয়া খাই খাই দুর্গাপুজাৰ কল্পনা কৰো। কুমাৰৰ হাতেৰে গঢ় দিয়া বিশ্বকর্মা, মা -দুর্গা, গণেশ,কার্তিক, মহিষাসুৰৰ মূর্তি পূজাৰ মণ্ডপত চাই বৰ ভাল লাগিছিল । কিন্তু আজিকালি ভীষণ ভিৰ হোৱাৰ বাবে বৰকৈ পূজাৰ মণ্ডপত সোমাবলৈকে নাপাও। পূজাৰ আনন্দ মানে গৰম গৰম জেলেপী, আৰু বেলুন , এতিয়া অৱশ্যে অলপ ডাঙৰ হৈছো বাবে বেলুন কমকৈ কিনো। আগতে ওলাই গ'লেই দেউতাই প্রতি দিনাই বেলুন কিনি দিব লগা হৈছিল। 'সাপ বেলুন' বা ডাঙৰ ৰং -বিৰঙৰ বেলুনবোৰ ঘৰলৈ আনি কিমান যে ভাল লাগিছিল। তাৰ মাজৰেপৰা এটা বেলুন ফুটি গলে বৰ দুখ পাইছিলো। পূজাত পুতলা বন্দুকৰ বাবে সদায় মা-দেউতাক জিদ কৰিছিলো । কিন্তু আজিলৈকে মা-দেউতাই কেতিয়াও বন্দুক কিনি নিদিলে। সদায় বুজাইছিল বন্দুক ভাল বস্তু নহয়। সেয়েহে বন্দুকৰ সলনি ,বেলুনৰ লগতে বহুত খেলা বস্তুকে কিনি দিছিল। তাৰে বহুবোৰ বস্তু আজিও সযতনে থৈ দিছো।

পৰিয়ালৰ সকলোৰে লগত পূজা চাবলৈ গৈ কিমান যে ভাল লাগিছিল। দিনত আইতা -ককাৰ লগত ওচৰৰ পূজা চাই , ৰাতি আকৌ মা-দেউতাৰ লগত দূৰৰ পূজা চাইছিলো। দশমীৰ দিনা ৰাতিপুৱা ককা আৰু আইতাৰ লগত শঙ্কৰ জন্মোতসৱৰ ভাগৱত ফুৰোৱাৰ শোভাযাত্রালৈ গৈ বৰ ভাল লাগে। দুপৰীয়া ভাত খাই উঠি দেৱী বিসর্জন চাবলৈ যাওঁ। এটা বছৰৰবাবে দেৱীক বিদায় দিওঁতে মনত বৰ দুখ লাগে। পূজাৰ সেই সুন্দৰ স্মৃতি আজিও মই মনত লৈ ফুৰিছো।

গৰমৰ বন্ধ

ৰণুজ দুৱৰা
সপ্তম শ্ৰেণী

গৰমৰ বন্ধ বুলিলে আমাৰ বহুত ভাল লাগে। গৰম বন্ধৰ দিন কেইটাত আমি কিমান যে কি কৰো, ফুৰিবলৈ যাও, চিনেমা চাবলৈ যাও, ৰেষ্টুৰেণ্টত খাবলৈ যাও, বজাৰ কৰিবলৈ যাও আৰু বহুত কিবা কিবি কৰো। সেইকাৰণেইমোৰ গৰমৰ বন্ধৰ দিনকেইটা বহুত ভাল লাগে।

মোৰ ঘৰ শিৱসাগৰ জিলাৰ চাৰিং নামে এক ভিতৰুৱা অঞ্চলত। মোৰ মা-দেউতা আৰু আইতা আছে। মই মা-দেউতা আৰু আইতাৰ লগত কিছুদিন ঘৰতে কটালো । ঘৰত টি.ভি. চালো, খেলিলো,আইতাৰ মুখৰ কিছু ভাল লগা কথা শুনিলো। এনেকৈ অলপ দিন পাৰ হ'ল। তাৰ পিছত এদিন দেউতাৰ লগত শিৱসাগৰ ফুৰিবলৈ গ'লো। শিৱসাগৰত আহোম ৰজাৰ দিনৰ ৰংঘৰ, তলাতল ঘৰ, শিৱসাগৰ পুখুৰী, পার্ক ইত্যাদি আছে। এইবিলাক চাই মোৰ বহুত ভাল লাগিল। এইবিলাক মই আগতেও দেখিছো। তাৰমাজতে এদিন গড়গাঁৱৰ কাৰেংঘৰ চাবলৈও গ'লো। গড়গাঁৱৰ কাৰেংঘৰ বহুত ধুনীয়া। বন্ধৰ দিনকেইটাৰ মাজতে মই মোৰ কৰণীয় হোমৱর্ক বিলাকো কৰিলো আৰু লগতে কেইখনমান কিতাপো পঢ়িলো। মাজতে মই মাৰ লগত মামাৰ ঘৰত থাকিবলৈও গ'লো। কেইদিনমান জেঠাইৰ ঘৰতো থাকিলো। এনেকৈয়ে গৰমৰ দিনকেইটা শেষ হ'ল।

পখিলা

আদ্রিজা স্নেহা গগৈ
সপ্তম শ্ৰেণী

পখিলা মোৰ বৰ ভাল লাগে/ নানা বৰণৰ পখিলাবোৰ দেখিবলৈ বৰ ধুনীয়া/ পখিলাবোৰ যেতিয়া ফুলত পৰি থাকে তেতিয়া দেখিবলৈ বৰ ভাল লাগে/ এজাক পখিলা যেতিয়া একেলগে উৰে তেতিয়া দেখিবলৈ বৰ সুন্দৰ লাগে/ পখিলাবোৰ দেখিলে ধৰিবলৈ মোৰ খুব মন যায় / কিন্তু যেতিয়াই ধৰিবলৈ যাও তেতিয়াই বহুত ওপৰলৈ উৰা মাৰে / দৃশ্যটো দেখিবলৈ বৰ মনোমোহা হয়/ কিন্তু দুর্ভাগ্যজনক কথা যে আজি কালি পখিলাৰ ডাঙৰ জাক একেলগে দেখিবলৈ পোৱাই নাযায়/ জাক পখিলাতো দূৰৈৰ কথা আনকি এটা দুটা পখিলাও আজি কালি দেখা পোৱাতোও চৰম সৌভাগ্যৰ কথা যেন হৈ পৰিছে/ ঘৰৰ সমুখৰ বাগিচাখনত পখিলাবোৰ উৰি থকা দেখিলে মনটো বৰ ভাল লাগে/ এতিয়া বাগিচাখনত খুব কমেইহে পখিলা দেখা পাও/ কেতিয়াবা ভাবো পখিলাবোৰ জানো কলৈ গল/

অবুজন মই

জাহিন ৰাফিয়া শ্বাহ
নৱম শ্ৰেণী

এদিন মাৰ লগত মই আমাৰ ওচৰৰ মল এখনলৈ গৈছিলো / মায়ে মোক এটা টি-চার্ট কিনি দিলে/ মই মোবাইলত ফটো উঠাই মোৰ ফ্ৰেইণ্ড গ্ৰুপত দিলো/ গ্ৰুপত মোৰ বান্ধৱী ৰোজে তাইৰ নতুন মোবাইলৰ ফটো দিলে/ সেই মোবাইলটো তাইৰ ককায়েকে তাইক উপহাৰ দিয়া বুলি লিখিলে / তাৰ কিছুদিন পাছতে ৰোজ আমাৰ ঘৰলৈ আহিছিল/ তাইৰ মোবাইলটো দেখি বৰ ভাল লাগিল/ মোৰো তাইৰ দৰে এটা মোবাইল লবলৈ মন গ'ল/ মাক মই মোবাইল কিনিবলৈ পইছা বিচাৰিলো/ মায়ে নিদিলে/ ক'লে অহাবছৰ দিম বুলি/

মোৰ বৰ বেয়া লাগিল/ মই খণ্ডতে সেইদিনা ভাত নাখালো/ মায়ে ৰাতি মোক মাতোতেও মই মাত নিদিলো/ এমাহ আগতে বাইদেউক মায়ে এটা নতুন মোবাইল দিছিল/ মোকনো কিয় দিব নোৱাৰে/ পিছদিনা মই ৰোজৰ ঘৰলৈ গলো/ তাইৰ ঘৰত মই দিনটো থাকিলো/ মায়ে চিন্তা কৰিব বুলি মই জানো, কিন্তু মোবাইল নিদিয়াৰ বাবে মই মাক খবৰ নিদিলো/ সন্ধিয়া ঘৰ আহি পাওঁতে মায়ে মোক মাতিলে/ মোক ওচৰত বহাই মায়ে মোক ক'লে, তুমি মোক বেয়া পাইছা, মই বুজিছো, কিন্তু সেইদিনা মোৰ হাতত একেবাৰে পইছা নাছিল/

বেংকৰ পৰা দিব পাৰিলাহেঁতেন --- মই উত্তৰ দিলো/

মায়ে মোক আৰু একো নকলে/ মই মোৰ কোঠাত গৈ বিছনাত বহি কান্দিবলৈ ধৰিলো/ সেই সময়তে দেউতাই মোৰ কান্দোন শুনি সোমাই আহিলে/ কিয় কান্দিছে বুলি সোধাত মই গোটেই কথাখিনি বিবৰি কলো/ দেউতাই মোক মৰম কৰি ক'লে, আই, তুমি মোবাইল বিচাৰিলা আৰু আমি দিব নোৱাৰিলো/ মই বুজি পাইছো তুমি কিয় বেয়া পাইছা/ কিন্তু আমাৰ অলপ অসুবিধা হৈছে/ তুমি সৰু ছোৱালী কাৰণে এইবোৰ সমস্যাৰ কথা ক'ব নিবিচাৰো/ এইবুলি কৈ দেউতা ওলাই গ'ল/ পিছদিনা সন্ধিয়া দেউতাই মোক পুনৰ মাতি ক'লে --- লোৱা, মোবাইল আনি দিছো/ আজি আৰু ভাত নোখোৱাকৈ নাথাকিবা/

মই মোবাইলটো পাই বৰ ভাল পালো/ দেউতাক সাৱটি ধৰি ধন্যবাদ জনাই ভাত খাবলৈ গ'লো/ ফ্ৰেইণ্ড গ্ৰুপত মোৰ নতুন মোবাইলৰ খটো দিলো/ সকলোৱে লাইক দিয়াত বৰ ভাল লাগিল/ কিছুদিন পাছত মাৰ মোবাইলটোত কিবা অসুবিধা হোৱাত মায়ে অলপ চাই দিব ক'লে/ মই মোবাইলটো ঠিক কৰি মোৰ চকু এটা মেছেজত পৰিল/ বেংকৰ পৰা অহা মেছেজ/ লিখা আছিল যে মাৰ একাউণ্টৰ পৰা কোনোবাই চাইবাৰ ফ্ৰড কৰি পইছা উলিয়াই লৈ গ'ল/ মই মেছেজত তাৰিখটো চালো/ দেখিলো, আমি মললৈ যোৱা দুদিন আগৰ তাৰিখ/ মই ৰৈ গ'লো/ মাক মোবাইলটো দিবলৈ গ'লো/ মায়ে ভাত ৰান্ধি আছিল/ মই মাৰ ওচৰলৈ গৈ মাক সাবটি ধৰি কান্দিবলৈ ধৰিলো/ মায়ে একো নকলে/ মোৰ চকুপানী নিজৰ চাদৰখনেৰে মচি মোক ক'লে, হাত ধুই ভাত খাবলৈ বহা/ তুমি ভালপোৱা চিকেন বনাইছো/

মিৰি জীয়ৰী

প্ৰাপ্তি প্ৰাৰ্থনা
নৱম শ্ৰেণী

মই পঢ়া উপন্যাসসমূহৰ ভিতৰত ৰজনীকান্ত বৰদলৈৰ দ্বাৰা ৰচিত মিৰি জীয়ৰী নামৰ উপন্যাসখনি মোৰ আটাইতকৈ প্ৰিয় গ্ৰন্থ। সামাজিক এই উপন্যাসখন পঢ়ি মোৰ কিয় ভাল লাগিল সেই বিষয়ে এটি আভাষ দিবলৈ মই চেষ্টা কৰিছো।

মিৰি জীয়ৰী গ্ৰন্থখনত এহাল মিচিং ডেকা- গাভৰুৰ জীৱনৰ কৰুণ প্ৰেম কাহিনী বৰ্ণিত কৰিছে। ডেকাজনৰ নাম জংকি আৰু গাভৰুজনীৰ নাম পানেই। সোঁৱণশিৰি নদীৰ পাৰৰ গাঁৱত সিহঁতৰ ঘৰ। তেওঁলোক শৈশৱত ধেমালীৰ লগৰী আছিল। ল'ৰালিৰ সেই লগৰী পিছলৈ ভালপোৱাৰ পাত্ৰ - পাত্ৰী হৈ পৰিছিল। কিন্তু পানেইৰ দেউতাকে তাইক কুমুদ নামৰ বেলেগ ডেকা এজনলৈহে বিয়া দিবলৈ থিক কৰিছিল। পামেইৰ মাকে কিন্তু কথাটো জানিও দেউতাকৰ ওপৰত মাতিব নোৱাৰাত জীয়েক পানেইয়ে সুযোগ বুজি জংকিলৈ পলাই যায়। ডালিমী নামৰ আন এজনী গাভৰুৱেও জংকিক ভাল পাইছিল। কিন্তু জংকি-পানেইৰ পবিত্ৰ ভালপোৱাক সন্মান জনাই দুয়োকে সহায় কৰিলে । কিন্তু জংকি পানেই ধৰা পৰিলত মাক-দেউতাকে পানেইক ঘৰলৈ লৈ আহিল। কিছুদিনৰ পিছত পানেই আকৌ পলাল। কিন্তু এইবাৰ পানেই অকলেহে গৈছে। সেয়ে মাক-দেউতাকে পানেইয়ে এইবাৰ কিবা অপকৰ্ম কৰিব বুলি জংকিলৈকে বিয়া দি দিব বুলি সৈমান হ'ল। কিন্তু জংকিয়ে পানেইক বিচাৰি যাওঁতে গাছিমিৰিৰ হাতত বন্দী হ'ল। পানেইকো বন্দী কৰি সিহঁতে তালৈকে আনে আৰু বিচাৰত দুয়োকে মৃত্যুদণ্ড বিহিলে। দুয়োকে বান্ধি নদীত উটুৱাই দিলে। নিষ্প্ৰাণ দেহ দুটা এটা সময়ত আহি সোঁৱণশিৰি নদীৰ ঘাটত লাগিলহি। সমাজে জংকি-পানেইৰ ভালপোৱাৰ স্বীকৃতি দিব নুখুজিলে।

মিৰি জীয়ৰী কেৱল মাত্ৰ জংকি-পানেইৰ সঁচা ভালপোৱাৰ কাহিনীয়েই নহয়, সেই সময়ৰ মিচিং সম্প্ৰদায়ৰ সামাজিক ব্যৱস্থাও এই গ্ৰন্থখনে প্ৰতিফলিত কৰিছে। মিৰি জীয়ৰী উপন্যাসখন লেখকৰ মিচিং সমাজৰ অভিজ্ঞতাৰে পুষ্ট এখন সুন্দৰ গ্ৰন্থ। উপন্যাসখনত আন এগৰাকী মিচিং গাভৰু ডালিমীৰ চৰিত্ৰ ত্যাগৰ আদৰ্শৰে মহীয়ান। গ্ৰন্থখনত মিচিং সমাজৰ সাংস্কৃতিক জীৱনধাৰাও লেখকে বৰ সুন্দৰভাৱে বৰ্ণনা কৰিছে। উপন্যাসখনত বৰ্ণিত ব্ৰহ্মপুত্ৰ আৰু তাৰ উপনৈ সোঁৱণশিৰিৰ বৰ্ণনা, লগতে পুৰণি উত্তৰ লক্ষীমপুৰৰ কিছু কিছু ঠাইৰ বৰ্ণনাই মোৰ মন পুলকিত কৰে। তাৰোপৰি গ্ৰন্থখনত বৰ্ণিত চাংঘৰ আৰু শুৱলা মিচিং বিহুৱেও মোৰ মনত আনন্দ দিয়ে। সেয়ে সকলো ফালৰ পৰা মিৰি জীয়ৰী গ্ৰন্থখন মোৰ প্ৰিয়।

শ্বিলঙলৈ গৈছিলো

শুভেচ্ছা বৰা
সপ্তম শ্ৰেণী

মই এইবাৰ গৰমৰ বন্ধত শ্বিলঙলৈ গৈছিলো/ শ্বিলঙৰ ৰাষ্টাবোৰ বৰ ধুনীয়া/ আমি যাওতে অলপ অলপ বৰষুণো দি আছিল/ আমি প্ৰথমে বৰাপানী লেকত গৈছিলো আৰু তাত আমি বোটিং কৰিলো/ তাৰ পাছত শ্বিলং পাই আমি এখন হোটেল ল'লো আৰু আবেলি সময়ত আমি শ্বিলং পিক, এলিফেণ্ট ফলচ্, এয়াৰ ফোৰ্চ মিউজিয়াম, চাৰ্ছ আদিলৈ ফুৰিবলৈ গ'লো/ ফুৰি আহি আমি শ্বিলং টাউনখনত ঘূৰিলো/ পাছদিনা আমি বহুত ভিউ পইণ্ট চালো আৰু বহুত ৰাটাৰ ফল দেখিলো/ তাৰ পাছত আমি দুটা গুহালৈ গৈছিলো/ প্ৰথম গুহাটোত যাওতে আমি ১০ কিলোমিটাৰ খোজ কাঢ়ি যাবলগীয়া হৈছিল/ গুহাটো বৰ ডাঙৰ আছিল / সেইদিনা অলপ অলপ বৰষুণো আহি আছিল/ আমি দেখা বহুতো ৰাটাৰফল ডাৱৰে ঢাকি ধৰিছিল/ তাৰ পিছত আমি মৌচমাই গুহালৈ গৈছিলো/ গুহাটোৰ ৰাষ্টাবোৰ বহুত পিছল আৰু তাৰ পাথৰবোৰ বৰ পিছল আছিল/ সেইকেইদিন শ্বিলঙত আমি বহুত আনাৰস খালো/ অলপ-অচৰপ বজাৰ-সমাৰ কৰি আমি শ্বিলঙৰ পৰা উভটি আহিলো/ মোৰ এইবাৰৰ এই শ্বিলং যাত্ৰা বৰ আনন্দদায়ক আছিল/

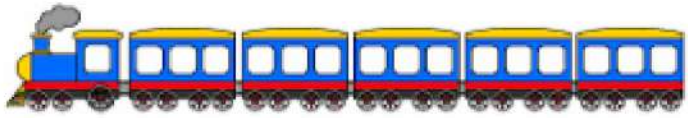

ৰেলযাত্রা

কন্যাকা তামুলী
নৱম শ্ৰেণী

ভ্ৰমণ মোৰ বৰ প্ৰিয়। ভ্ৰমণে মানুহক বিভিন্ন অভিজ্ঞতাৰে পুষ্ট কৰি তোলে। ভ্ৰমণৰ ক্ষেত্ৰত মই ৰেলৰ যাত্ৰাকে অতি সুবিধাজনক আৰু আৰামদায়ক হিচাপে গণ্য কৰো।

আজিৰ পৰা কিছু বছৰ আগতে কৰ'ণা মহামাৰীৰ আগতে মই আৰু মোৰ মা-দেউতা, বাইদেউ, খুড়া-খুড়ী আৰু দুজনমান বন্ধু-বান্ধৱীৰ সৈতে আমাৰ ওচৰ চুবুৰীয়া ৰাজ্য চিকিমলৈ বুলি ৰেলেৰে যাত্ৰা কৰিছিলো। জুলাই মাহৰ প্ৰথম সপ্তাহতেই আমি চিকিমলৈ গৈছিলো। গুৱাহাটী ৰেল ষ্টেচনৰ পৰা ৰাজধানী এক্সপ্ৰেছেৰে আমাৰ গন্তব্য স্থানলৈ বুলি আমি যাত্ৰা আৰম্ভ কৰিলো ৰেলৰ শীত-তাপ নিয়ন্ত্ৰিত কোঠাত বহি। মই মোৰ আসন একেবাৰে ওপৰত ঠিক কৰি লৈছিলো। ৰেলৰ আসনত বহি আমি সকলোৱে খুউব আনন্দ কৰিছিলো। ঘৰৰ পৰাও বিভিন্ন খাদ্য-বস্তু লগত লৈ গৈছিলো।

আমি সকলোৱে খাই-বৈ খুউব আনন্দেৰে গান শুনি, গান গাই শিলিগুৰি পালোগৈ। তাৰ পাছত আমি ষ্টেচনত নামি চাৰিচকীয়া বাহন লৈ আমাৰ গন্তব্য স্থান শিলিগুৰি পালোগৈ। কি যে সুন্দৰ চিকিম ৰাজ্য। ক'তো অলপো জাৱৰ- জোথৰ দেখিবলৈ পোৱা নাযায়। কি সুন্দৰ পৰিবেশ, বাতাবৰণ, চাফ-চিকুণতাৰে পৰিপূৰ্ণ এখন ৰাজ্য। চিকিমলৈ গৈ আমি চিকিম মণিপাল ইউনিভাৰচিটি দেখিবলৈ পাইছিলো। আমি চিকিমৰ এম জি মাৰ্গত আছিলো। আমি চিকিমৰ বুদ্ধদেৱৰ মঠসমূহ চাবলৈ গৈছিলো আৰু লগতে বিভিন্ন হ্ৰদসমূহলৈও গৈছিলো। তাৰ পিছত য়াকৰ পিঠিত উঠি ফটো তুলিছিলো আৰু চিকিমৰ পৰম্পৰাগত সাজ-পোছাক পিন্ধি ফটো তুলিছিলো । চিকিমৰ অনুপম প্ৰাকৃতিক সৌন্দৰ্য্য উপভোগ কৰি আমি পুনৰ ৰেলেৰে ঘৰলৈ আহি আহিলো। কি যে আনন্দৰ যাত্ৰা আছিল সেয়া।

ৰেলৰ যাত্ৰাক মই সদায় সুবিধাজনক বুলি ভাবো। সৰু ল'ৰা-ছোৱালীৰ পৰা বয়সস্থ সকলোলোকে অতি আৰামত আৰু খব কম খৰচত বিভিন্ন ঠাইলৈ যাত্ৰা কৰিব পাৰে। খোৱা-বোৱা আৰু নিত্য নৈমিত্তিক কামবিলাক কৰি একো অসুবিধা নোহোৱাকৈ ৰেলেৰে ভ্ৰমণ কৰিব পাৰি। তাৰ উপৰি ৰেলেৰে ভ্ৰমণ কৰিলে আমি বিভিন্ন ঠাইসমূহ দেখিবলৈ পাও লগতে আমি বিভিন্ন যাত্ৰীক লগ পাও আৰু তেওঁলোকৰ সৈতে কথা-বতৰা পাতি আনন্দৰে যাত্ৰা কৰিব পাৰি। গতিকে মই সদায়ে ৰেল যাত্ৰাক অগ্ৰাধিকাৰ দিও।

শৰত কাল

অনিন্দৰাজ কোঁৰৰ বৰা
অষ্টম শ্ৰেণী

অসমীয়াছটা ঋতুৰ ভিতৰত তৃতীয় ঋতু শৰতকাল বা শৰত ঋতু বৰ মনোমোহা হয়। আহিন মাহৰ প্ৰথমৰ পৰা আৰম্ভ হৈ এই ঋতু কাতি মাহৰ শেষত শেষ হয়। এই সময়ছোৱাত দিন ছুটী আৰু ৰাতি দীঘল হয়। লগতে তাপমাত্ৰাও নাতিশীতোষ্ণ হয়। প্ৰাকৃতিক সৌন্দৰ্য্যৰ বাবে এই ঋতুক ঋতুৰাণী বুলি কোৱা হয়। কাৰণ এই সময়তবিভিন্ন ফুল যেনে শেৱালি, বকুল, পাৰিজাত ফুল আদি ফুলে। নৈৰ পাৰত ফুলা কঁহুৱা ফুলেও সুন্দৰ পৰিবেশৰ সৃষ্টি কৰে।

শৰতকালত ভাৰতবৰ্ষত বিভিন্নধৰণৰ উতসৱ-পাৰ্বণ পালন কৰা হয়। ইয়াৰ ভিতৰত বিশেষভাৱে শাৰদীয় দূৰ্গাপূজা প্ৰায় ভাৰতৰ সকলো ঠাইৰ মানুহে কেইবাদিন ধৰি পাতে। ইয়াৰউপৰিও অতি উলহ-মালহেৰে দেৱালী, কালিপূজা, লক্ষ্মী পূজা আদিও পালন কৰে। আনহাতে এইসময়তে অসমত কাতি বিহু বা কঙালী বিহুও পালন কৰা হয়।

এই ঋতুত পুৱাৰ ভাগত কুঁৱলী পৰি শীতল পৰিবেশৰ সৃষ্টি কৰে। বাৰিষাৰ বৰষুণ নাইকীয়া হৈ সুন্দৰ পৰিবেশৰ সৃষ্টি হয় বাবে শৰতকাল মই বৰ ভাল পাওঁ।

মোৰ এখন প্ৰিয় গ্ৰন্থ

কঙ্কনা শইকীয়া
নৱম শ্ৰেণী

মোৰ এখন অতি প্ৰিয় গ্ৰন্থৰ ভিতৰত আৰনেট হেমিংওৱেৰৰ অল্ড মেন এণ্ড দ্যা ছি নামৰ গ্ৰন্থখন মোৰ অতিকৈ প্ৰিয়গ্ৰন্থ। আধুনিক বিশ্ব সাহিত্যৰ এজন বলিষ্ঠ লেখক হিচাপে তেখেত সমাদৃত। উক্ত গ্ৰন্থখন লেখকৰ শেষ বয়সৰ উপন্যাস। ঔপন্যাসিকৰ জীৱনৰ সমগ্ৰ অভিজ্ঞতা উপন্যাসখনত সঞ্চিত হৈ আছে।

উপন্যাসখনৰ আৰম্ভণিতে কিউবাৰ সাগৰ তীৰত মাছ মাৰি জীয়াই থকা ছান্টিয়াগো নামৰ বৃদ্ধ মাছমৰীয়াজনে সাহস, ধৈর্য্য আৰু হতাশাৰ মাজতো হাৰ নমনা এটা চৰিত্ৰ। হাজাৰ বাধা বিঘিনিৰ মাজতো তেওঁ নিজৰ স্বভিমান লৈ জীয়াই থাকিব বিচাৰে। লগৰ মাছমৰীয়াসকলে তেওঁক বয়স হোৱাৰ লগে লগে মাছ ধৰিব নোৱাৰাৰ বাবে ঠাট্টা –মস্কৰা কৰে। আনকি মেনোলিন নামৰ তেওঁৰ মাছ ধৰাত মাক দেউতাকে বৃদ্ধ ছান্টিয়াগাৰ সংগৰপৰা আতৰি থাকিবলৈ কৈছিল, কাৰণ ৮৪ টা দিন মাছ মাৰিবলৈ গৈ তেওঁ বিফল হৈছিল। সকলোৰে পুতৌ ভৰা চাৱনি মাছমৰীয়াজনে সহ্য কৰিছিল। কিন্তু তেওঁ নিজকে ভাঙি পৰিব দিয়া নাছিল। তেওঁ মনতে ভাবিছিল– মানুহ হাৰি যাব নোৱাৰে। এজন মানুহক ধ্বংস কৰিব পাৰি কিন্তু হৰুৱাব নোৱাৰি। অৱশেষত তেওঁ সফল হৈছিল। এটা বৃহত আকাৰৰ মার্লিন মাছ , তিনিদিন সাগৰত যুঁজি যুঁজি অৱশেষত পাৰ আহি পাবলৈ সক্ষম হৈছিল। মাছৰ জকাটোহে তেওঁৰ সৈতে আছিল কাৰণ ছার্কবোৰৰ লগত বৃদ্ধ মাছমৰীয়াজনে যথেষ্ট সংগ্ৰাম কৰিবলগীয়া হৈছিল। মার্লিন মাছটো অক্ষত অৱস্থাত সাগৰৰ তীৰলৈ আনিবলৈ চেষ্টা কৰিছিল। কিন্তু অৱশেষত মাছটোৰ প্ৰকাণ্ড জকাটো সাগৰৰ তীৰত পেলাই তেওঁৰ অৱশিষ্ট শৰীৰটো সাগৰৰ বালিত এৰি দিছিল । তেওঁৰ ছিৰিলা ছিৰিল হোৱা হাত দুখন মেলি তেওঁ বালিৰ ওপৰত পৰি দিছিল। ইমান কষ্টৰ অন্তত মার্লিন মাছটোৰ অন্তিম পৰিণিতি কি হল ভাবিবলৈ বাদ দি তেওঁ টোপনিৰ মায়াজালত সোমাই পৰিছিল। তেওঁ দেখুৱাব বিচাৰিছিল যে সত সাহস তথা সংগ্ৰামী মনৰ অধিকাৰী হলে তেওঁৰ বিজয় অনিবার্য্য। তেওঁ শেষত সকলোকে প্ৰমাণ কৰি দেখুৱালে যে তেওঁ পৰাভূত হোৱা ধৰণৰ মানুহ নহয়। উক্ত গ্ৰন্থখনে মোৰ মনত যথেষ্ট প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰিছে। বিশেষকৈ বৃদ্ধ মাছমৰীয়াজনৰ শেষ মূহুর্তলৈকে হাৰ নমনা সংগ্ৰামী চৰিত্ৰটোৱে মোৰ মনত যথেষ্ট সাঁচ বহুৱাই থৈ গৈছে। ছান্টিয়াগো অকলে মাজ সাগৰৰ বুকুলৈ গুচি গৈছিল সেইয়া তেওঁৰ আত্মবিশ্বাস। বিশ্ব সাহিত্যৰ অন্য শ্ৰেষ্ঠ গ্ৰন্থৰ এই উপন্যাসখনৰ এক গভীৰ নৈতিক অর্থ আছে। ই জীৱনৰ এক মহাকাব্যৰ দৰে।

এটা স্মৰণীয় দিন

আত্রেয়ী নেওঁগ
নৱম শ্রেণী

এইবাৰ গৰমৰ বন্ধ আমি বহু দিন পাইছিলো/ প্রথম কেইদিন মোৰ অসুখৰ চিকিতসা কৰাওতেই পাৰ হ'ল/ লাহে লাহে অলপ সুস্থ হোৱাত মা- দেউতাৰ লগত ওচৰতে ক'ৰবাত ফুৰিবলৈ যোৱাৰ কথা পাতিলো/ আমি সকলোৱে কথা পাতি এদিন অৰুণাচল প্রদেশৰ গোল্ডেন প্রগোডা চাবলৈ যোৱাৰ পৰিকল্পনা কৰা হ'ল/ স্বাধীনতা দিৱসৰ দিনা কোনো সংগঠনে বন্ধ দিয়াৰ বাবে তাৰ দুদিনৰ পিছত আমি অৰুণাচললৈ বুলি ওলালো/ ঘৰৰপৰা ওলাই অলপ দূৰ যোৱাৰ পিছতে মাৰ হঠাত গাড়ীৰ সন্মুখৰপৰা আইনাখনত চকু পৰিল, তাত এখন জাতীয় পতাকা লগাই থোৱা আছিল/ এইবাৰ স্বাধীনতা দিৱসৰ দিনা চৰকাৰে সকলোতে জাতীয় পতাকা লগাবলৈ কোৱাৰ কাৰণে দেউতাইও পতাকা এখন গাড়ীত লগাইছিল/ কিন্তু স্বাধীনতাৰ দিৱসৰ পিছদিনা পতাকা আতৰাই থ'ব লাগিছিল বুলি কোৱাত দেউতাই গাড়ীখন ৰখাই মোক গাড়ীৰপৰা নামি পতাকাখন আতৰাই আনিবলৈ কোৱাত পতাকাখন আইনাৰপৰা আতৰাই থ'লো/ কিন্তু তাতে মোৰ এটা ভুল হ'ল যে পতাকাখন মোটোকা মাৰি হাতত লৈ গাড়ীত উঠিলো/ তেতিয়া মায়ে মোক ক'লে যে পতাকাখন তেনেদৰে মোটোকাই দিব নালাগে/ পতাকাখন আমাৰ দেশৰ সন্মান/ মাৰ কথাত মই বৰ গুৰুত্ব নিদি একো নহয় বুলি ক'লো/ সেইটো শুনি মায়ে মোক খুব গালি দিলে/ কথা এটা নাজানিলে সুধি জানি বুজি লোৱাৰ সলনি এইদৰে অহংকাৰ কৰাৰ কাৰণে মোক বুজালে/ মইয়ো মনত বৰ বেজাৰ পালো আৰু খঙো উঠিল/ ভাবিলো ফুৰিবলৈ ঘৰৰপৰা ওলাই আহি এইদৰে গালি শুনিব লগা হৈছে/

খঙে দুখে বহু কথা ভাবি এটা সময়ত গাড়ীত টোপনি গ'লো/ গৈ গৈ অসম অৰুণাচল সীমান্তত আমাৰ গাড়ী ৰ'ল/ দেউতাই সীমান্ত অফিচলৈ পাৰপত্র আনিবলৈ গ'ল/ আমাৰ লগত আমাৰ মামাও গৈছিল/ মামাইও গাড়ীৰপৰা নামি দোকান এখনলৈ যাওঁতে এজন মানুহৰ মামাক কিবা কথাত বৰ বেয়াকৈ কোৱাত দুয়োৰে মাজতে তর্কাতর্কি আৰম্ভ হ'ল/ লাহে লাহে কাজিয়া বাঢ়ি যোৱাৰ হুলস্থুলত মই ঘপহকৈ সাৰ পালো/ কাজিয়া দেখি মোৰ বৰ ভয় লাগিল/ অলপ পিছত দেউতা মামা দুয়ো গাড়ীলৈ আহিল/ আমি আকৌ যাত্রা আৰম্ভ কৰিলো/

লাহে লাহে অলপ আগতে মাৰ ওপৰত উঠি থকা খঙটো নাইকীয়া হ'ল/ মা-দেউতা, মামাই পাতি থকা কথাবোৰ ঠিকেই আছিল/ কাৰণ সেই কাজিয়া কৰা মানুহজনেও মামাক একো নজনাকৈ অহংকাৰ কৰি কথা কৈছিল/ গতিকে কিবা এটা কথাৰ বিষয়ে ভালদৰে নজনাকৈ অহংকাৰ যে কৰিব নাপায় বুজি পালো/

আমি গৈ গোল্ডেন প্রগোডা পালোগৈ/ আবেলিৰ ৰঙচুৱা বেলিৰ পোহৰত গোটেইখন ঠাই অতি সুন্দৰ হৈ পৰিছিল/ তাকে দেখি মোৰ মন ভাল হৈ গ'ল/ মায়ে অলপ মৰম কৰি দিয়াত মনটো আৰু বেছি ভাল লাগি গ'ল/

অনুভৱ

তৃষ্মিতা বৰা
নৱম শ্ৰেণী

মই এগৰাকী নৱম শ্ৰেণীৰ ছাত্ৰী। মই হোষ্টেলত থাকো কাৰণে মোৰ ঘৰত থকা নহয়েই । কেৱল গৰমৰ বন্ধ আৰু শীতৰ বন্ধতহে মই ঘৰত থাকিবলৈ পাও। সেইকাৰণে মোক লগ কৰিবলৈ মা-দেউতাই স্কুলৰ হোষ্টেললৈকে আহে। তথাপিও যেন হেপাহ নপলায়। সেইবাবে মই গৰমৰ বন্ধ বা শীতৰ বন্ধলৈ অধীৰ আগ্ৰহেৰে বাট চাই ৰও। এই বছৰৰ গৰমৰ বন্ধ পাই কিমান যে ফূৰ্টি লাগিছিল তাক ভাষাৰে বৰ্ণনা কৰিব নোৱাৰি। নিৰ্দিষ্ট দিনত গৰমৰ বন্ধত ঘৰলৈ আহিলো।

কভিড ১৯ ৰ লকডাউনে আমাক শিক্ষাৰ ক্ষেত্ৰত অনলাইন ক্লাছ কৰাৰ যি সুবিধা কৰি দিলে মোৰ দৃষ্টিভংগীত সেয়া বেয়াহে কৰিলে। কাৰণ অনলাইন ক্লাছ কৰোতে মোবাইল বা লেপটপৰ ব্যৱহাৰ হয়। ইয়াৰ ফলত অনবৰতে দুবছৰ ধৰি মোবাইল ব্যৱহাৰ কৰোতে কৰোতে মোবাইলৰ প্ৰতি এনেকুৱা এটা নিচা সোমাই গল যে সেইটো নহলে যেন জীৱনটো আগেই নাবাঢ়ে। ইয়াৰেই কুফলৰ প্ৰভাৱ মোৰ গৰমৰ বন্ধত ঘৰতেই ঘটিল। ঘৰলৈ আহি প্ৰথম দুদিনমান মায়ে মোক একো কামেই কৰিবলৈ নিদিয়ে। হয়তো হোষ্টেলত থাকো সেইবাবে।

ৰাতিপুৱা উঠি নিজৰ নিত্য নৈমিত্তিক কৰ্ম শেষ কৰি মোবাইলত ব্যস্ত থাকো। মায়ে সময়মতে সকলো যোগান ধৰে। গতিকে ময়ো সিমান চিন্তাও নকৰো আৰু নাভাবো। এদিন ঘৰলৈ কাম কৰা মানুহজনী কিবা কাৰণত অহা নাছিল। সেইদিনা মাৰ কিছু কষ্ট হৈছিল। কিন্তু মই অনুভৱ কৰা নাছিলো। মই কেৱল মোবাইলত ব্যস্ত আছিলো। মায়ে মোক পাকঘৰৰ কামত সহায় কৰি দিবলৈ মোক কেইবাবাৰো মাতিছিল, মই কিন্তু কাণষাৰ দিয়া নাছিলো। কেৱল মই উত্তৰ দিছিলো --- মই নোৱাৰো। কেইবাবাৰো এইদৰে কোৱাত মাৰ যে খং উঠিব মই ভবাই নাছিলো । মোৰ উত্তৰ শুনি ইমান গালি পাৰিলে যে মোৰ এনেকুৱা ভাৱ হ'ল যেন গৰমৰ বন্ধটো কিয় দিলে। নিদিয়া হ'লে হয়তো আজি গালি নুশুনিলোহেঁতেন। মায়ে বহু কথাই ক'লে কিন্তু তাৰ ভিতৰত দুটামান কথা মোৰ কাণত বাজিলে --- থাক থাক, বাপেৰ-মাৰ থকালৈকে একো চিন্তা কৰিব নালাগে। যিদিনা নিজে সংসাৰ চলাবি তেতিয়া গম পাবি। মই জীয়াই থকালৈকে চিন্তা নাই। মোবাইলে খুৱাব তহঁতক। থাক থাক মোবাইলকে চাই থাক। মাৰক একো সহায় কৰি দিব নালাগে, ইত্যাদি ইত্যাদি ---- এইকেইষাৰ কথাই মোক বৰ বেজাৰ দিলে আৰু খঙো উঠিল। গোটেই দিনটো সেইদিনা বৰ অশান্তিৰে পাৰ হ'ল। মায়েও মোক মাত বোল কৰা নাছিল আৰু ময়ো নাছিলো। অৱশ্যে মাৰ খণ্ডটো যুক্তিসংগত আছিল।

সেই দিনটো মোৰ কাৰণে বৰ বেদনাদায়ক আছিল কাৰণ ইমান মৰম কৰা মা জনীয়ে যে মোক এনেকৈ গালি পাৰি খং কৰিব মই ভাবিবই পৰা নাছিলো। দিনটো মই ভাত-পানী একো নাখালো। কেৱল বিচনাতে গাৰুটো লৈ চকুপানী টুকি থাকিলো। সন্ধিয়া হ'লত মোৰ পেটটোৱে আমনি কৰিবলৈ ধৰিলে। ময়ো শুই শুই বহু চিন্তা কৰিলো আৰু এটা উত্তৰ পালো যে ভুলটো মোৰেই। মাৰ মোৰ ওপৰত উঠা খং স্বাভাৱিক। মাৰ ঠাইত মই হোৱা হলেও হয়তো একেই কৰিলোহেঁতেন। সেয়ে মই মোৰ ভুলটো বুজিব পাৰি মোবাইলটোৰ ওপৰতেই বৰ খং উঠিল আৰু মনে মনে প্ৰতিজ্ঞা কৰিলো যে আজিৰ পৰা মোবাইলটো সময়তহে চাম। যিকেইদিন থাকো মাক সহায় কৰিম। তাৰ পিছত সলম নকৰি মই মাৰ ওচৰলৈ গৈ মোৰ ভুল স্বীকাৰ কৰিলো আৰু ক'লো --- আজিৰ পৰা মই তোমাক খং কৰিবলৈ সুবিধা নিদিও --- এইবুলি কৈ মাক সাৱটি ধৰিলো। মায়েও মোক মৰম কৰি চুমা এটা খালে। এনেদৰেই মাৰ লগত মোৰ মৰমৰ সম্বন্ধ পুনৰ মধুৰ হৈ উঠিল। দেৰিকৈ হ'লেও মই মোৰ ভুলটো অনুভৱ কৰিলো।

চাকৰি

ৰাজেন ভৰালী
শিক্ষক (পদাৰ্থ বিজ্ঞান)

আজি কিছু দিনৰ পৰা পৰাণৰ মনটো ক'তো নবহা হৈছে/ মনটোক কিবা এটাত খামুচি ৰাখিব বিচাৰিও সি পৰা নাই/ ক'তো একো ভাল নলগা হৈছে/ কিতাপ এখনকে মেলি পঢ়িবলৈ যত্ন কৰিলে, এফালৰ পৰা পাতবোৰ লুটিয়াই শেষ, পঢ়িবলৈ সি একো বিচাৰি নাপালে/ আচলতে তাৰ মানসিক অস্থিৰতাই মনটোক কতো থিতাপি লাগিব দিয়া নাই/ টিভিটোকে চাওঁ বুলি বহিল/ ৰিমোটটো হাতত লৈ এফালৰ পৰা চেনেলবোৰ সলাই গ'ল, ওঁহো চাবলৈ একো বিচাৰি নাপলে/ তাৰ বাল্য বন্ধু অমিতৰ ঘৰৰ পৰা এপাক ফুৰি আহোঁ বুলি বহাৰ পৰা উঠিল/ অকনমান চিন্তা কৰি পুনৰ বহিল/ নাই, তাৰ তালৈ গৈনো কি হ'ব ? আজিকালি তাৰ লগত কথাৰ লাইন নিমিলা হৈছে/ বিশেষকৈ সি বিয়াখন পতাৰ পাছৰ পৰা/ আকৌ ভাবিলে নিখিলৰ ঘৰৰ পৰা এপাক আহিব/ চাইকেলখন লৈ ৰাষ্টালৈ ওলাল/ তিনিআলিটো পাৰ হৈ নিখিলৰ ঘৰলৈ সোমোৱা বাটটো পোৱাৰ পাছত সি ৰৈ গ'ল/ নিজকে নিজে প্ৰশ্ন কৰিলে- তাৰ ঘৰলৈ গৈনো কি হ'ব ? সদায় তাৰ পেনপেনিয়া কথা/ দেউতাৰ পৰা টকা পালে ব্যৱসায় আৰম্ভ কৰিব, ৰিমাক বিয়া পাতিব, বাইক ল'ব ইত্যাদি ইত্যাদি/ সদায় দেউতাকৰ টকাক লৈ ৰঙীণ সপোন ৰচে/ নিজে কিবা এটা যে কৰোঁ তাৰ কোনো চেষ্টা নাই / বাটৰ পৰাই চাইকেলখন ঘূৰাই পুনৰ ঘৰলৈ উভতিল/ কিয় আজি সি ইমান মানসিক অশান্তিত ভুগিছে, ক'তো মনটোক থিৰ ৰাখিব পৰা নাই/ আনৰো কেতিয়াবা এনে হয়নে? আকৌ ভাবিলে- নৈৰ ঘাটৰ ফালে এপাক ফুৰি আহিব, কিজানিবা মনটো ভাল লাগে / পৰেশৰ পান গুমটিৰ কাষৰ ৰাষ্টায়েদি নৈৰ ফালে আগবাঢ়িল / নদীৰ সিপাৰে গৰখীয়া লৰাবোৰে সাঁতুৰি আনন্দত মতলীয়া হৈ আছিল/ নৈৰ কাণে কাণে কঁহুৱাৰ ধকধকীয়া বগা ফুলবোৰ বতাহত হালি জালি আছে/ কঁহুৱাৰ মাজে মাজে গৰুৰ জাক/ পাছে এইবোৰ দৃশ্যই পৰাণৰ মনত একো আনন্দ দিব নোৱাৰিলে/ তাৰ মন ভাল নলগাৰ কাৰণ নোহোৱাও নহয়/ পিছে সি কথাটো কাকো ক'বও নোৱাৰে/ সি এনেও গহীন স্বভাৱৰ/ মনৰ বেদনা কাকো প্ৰকাশ নকৰাকৈ মনৰ মাজতে ৰাখিবলগীয়া হোৱাৰ বাবে তাৰ এই অৱস্থা/

আচলতে ইভাহঁতৰ ঘৰৰ পৰা অহাৰ পাছৰে পৰা তাৰ মনত অস্থিৰতাই দেখা দিছে / ইভাহঁতৰ ঘৰ তাৰ ঘৰৰ পৰা দুই কি.মি. মান নিলগত/ সি এম.এচ.চি. ফাইনেল দি অহাৰ পাছত তাইৰ সতে চিনাকি/ বিয়া এখনত লগ পাইছিল/ তাৰ বন্ধু নিখিলে তাইৰ সতে চিনাকি কৰাই দিছিল/ পৰাণৰো ইভাৰ সতে চিনাকি হৈ ভাল লাগিল/ আগে পিছেও ছোৱালীৰ সতে এনেধৰণৰ নতুনকৈ চিনাকি নোহোৱা নহয় কিন্তু সিদিনা তাইৰ সতে চিনাকী হৈ তাৰ কিবা এটা বেলেগ ভাল লাগিছিল /

পাছলৈ ইভাৰ আমন্ত্ৰণত পৰাণ প্ৰায়েই সিহঁতৰ ঘৰলৈ গৈছিল/ ঘৰৰ প্ৰতিজন সদস্যই পৰাণৰ আগমনক গুৰুত্ব দিছিল, মাকেও ইভাৰ পঢ়া-শুনাত মাজে মাজে চকু ফুৰাই দিবলৈ অনুৰোধ কৰিছিল/ ইভাৰ মাকে পৰাণৰ পঢ়া-শুনাৰ বৰ শলাগ লৈছিল/ ইফালে পৰাণেও তাৰ প্ৰতি থকা ইভাৰ দুৰ্বলতা তাইৰ চকুত সহজে ধৰিব পাৰিছিল/ মুখ ফুটাই ইজনে সিজনক একো নক'লেও লাহে লাহে সিহঁতৰ মাজত প্ৰেমৰ বীজ অংকুৰিত হৈছিল/ পাছলৈ ইভাৰ মাকেও পৰাণক জোঁৱাই হিচাবে পোৱাৰ আশা মনত পুহি ৰাখিবলৈ ল'লে/ কাৰণ পৰাণ এজন উচ্চ শিক্ষিত আৰু ভদ্ৰ ল'ৰা, গাৱঁৰ সকলোৱে তাক ভাল পায়/

সংস্থাপিত হ'ব পৰা নাই যদিও চেষ্টা অব্যাহত ৰাখিছে, ক'ৰবাত নহয় ক'ৰবাত নিশ্চয় গতি লাগিব/ ইভাৰ দেউতাকে এইবোৰ কথাৰ একো ভু-ভা নাপায়, কেৱল নিজৰ চাকৰিত ব্যস্ত / মাজে সময় পৰাণক ঘৰত লগ পালে দুই এটা কথা পাতে যদিও বৰ বিশেষ একো নাভাৱে/ দেউতাকে ইভাৰ বিয়াৰ কথা নভবা নহয় কিন্তু পৰাণক লৈ তেনে একো ভবা নাছিল/ এজন উপযুক্ত ল'ৰা পালে ছোৱালীজনীক উলিয়াই দিয়াৰ কথা মনে মনে চিন্তা কৰি আছিল/

পৰাণে পিলিঙা ল'ৰাৰ দৰে ইভাৰ সতে পেনপেনীয়া কথা পাতিবলৈ বেয়া পায়/ ইভাই মনৰ ভিতৰত জাপ খাই থকা কথাবোৰ চিঠিৰ মাধ্যমেৰে প্ৰকাশ কৰিছিল/ পৰাণে চিঠিবোৰ পঢ়িছিল যদিও প্ৰতিটো চিঠিৰ উত্তৰ দিয়াটো প্ৰয়োজন বোধ নকৰিছিল/ কাৰণ পৰাণে ভালদৰে জানে যে ছোৱালীবোৰৰ কথাৰ ভাণ্ডাৰ কেতিয়াও শেষ নহয় / তথাপিও ইভাৰ প্ৰতি তাৰ আকৰ্ষণ কিয় জানো দিনে দিনে বাঢ়িব ধৰিছিল/ কেইদিনমান আগৰ কথা, ইভাই পৰাণক ঘৰলৈ মাতি পঠিয়াইছিল/ বহুদিন হৈছিল সিহঁতৰ ঘৰলৈ নোযোৱা, আবেলি চাইকেলখন লৈ ইভাহঁতৰ ঘৰ পালেহি/ চোতালত চাইকেলখন থৈ কলিং বেলটো টিপিলে/ অন্যদিনা তাই দৌৰ মাৰি আহি দুৱাৰখন খুলি দিয়ে, আজি কিন্তু সেই তত্পৰতা দেখা নাপালে/ কিছু সময় অপেক্ষাৰ অন্ততহে ইভাই দুৱাৰখন খুলিলে/ মুখত আজি মিচিকিয়া হাঁহিৰ সলনি গাম্ভিয্যতা/ আগে পিছে ইভাই দুৱাৰমুখত দেখা মাত্ৰকে কয়, "পৰাণ দা, আজি ভুলতে কাৰ ঘৰ বুলি সোমাল?'' পৰাণে ধেমালিতে কয়- বাটৰুৱাক পানী খাবলৈ চিনাকী ঘৰ লাগে নেকি? হ'ব হ'ব বুলি ইভাই ভিতৰলৈ মাতি নিয়ে /

পৰাণক বহিবলৈ কৈ ইভা ভিতৰলৈ সোমাই গ'ল/ তাইৰ ব্যৱহাৰত পৰাণৰ মনত অলপ খেলিমেলি লাগিল/ বহুদিনৰ মূৰত যোৱাৰ বাবে ইভাই অভিমান কৰিছে নেকি বাৰু? বহিবলৈ কৈ নহাই হ'ল / টেবুলত পৰি থকা কিতাপ খনকে মেলি চাবলৈ ধৰিলে যদিও মনটো ইভাৰ ফালে উৰা মাৰিলে/ আনদিনা অভিমান কৰিলেও বেছি সময় নিটিকে, আজি অলপ বেলেগ যেন লাগিছে/ ইভা সোমাই অহাত পৰাণে সুধিলে, - খুৰী নাই নেকি? ঘৰত কাকো দেখা নাই যে? ইভাই ক'লে,- মা অলপ ওলাই গৈছে, দেউতা অফিচৰ পৰা অহাই নাই / কিছু সময় দুয়ো মনে মনে থাকিল/ নিৰৱতা ভংগ কৰি পৰাণে সুধিলে,- কোৱাছোন ইভা কিয় মাতিছিলা? ক্ষন্তেক ৰৈ ইভাই ক'লে-"যোৱা কালি ঘৰত বিয়াৰ কথা ওলাইছিল, দেউতাই বিয়া দিয়াৰ কথা ভাবিছে, যোৱহাট ফালৰ লৰা, বেংকত হেনো চাকৰি কৰে / অহাকালি লৰাৰ পৰিয়াল আহিব, সকলো মিলিলে কথা খাটাং কৰিহে যাব হেনো/" অ' সেইবাবে তুমি আনন্দতে মোক মাতি পঠিয়ালা- পৰাণে ক'লে/ 'দেউতাৰ আগত মই কিবা ক'ব পাৰোঁ নেকি?'-ইভাৰ উত্তৰ/ চাকৰিয়াল ল'ৰা যে ক'ত কব পাৰিবা, মনে মনে ভালেই পাইছা/ 'আপুনি মোক ভুল বুজিছে পৰাণদা, দেউতাৰ আগত মই একো ক'ব নোৱাৰোঁ'/ দিঘলীয়া হুমুনিয়া এটা লৈ পৰাণে ক'লে- তুমিতো দেখিছাই , চাকৰিৰ বাবে লাগিয়েই আছোঁ, অলপ সময় দিয়া, সকলো ঠিক হৈ যাব/ তাই লাহেকৈ ক'লে-ছোৱালীৰ বয়স ৰৈ থাকে জানো? তোমাৰ চাকৰিটো হোৱা হ'লেও কথাটো বেলেগ আছিল/ "এতিয়াহে আচল কথাটো ক'লা, প্ৰেমটো চাকৰিতহে , লাগিলে মদেই খাওক বা জুৱাই খেলক- নহয় জানো?" তাই মনে মনে ৰ'ল, পৰাণৰ চকুলৈ চোৱাৰ সাহস গোটাব নোৱাৰিলে/ পৰাণে খঙতে ক'লে- তেতিয়াহলে ইমান দিনে তুমি মোৰ লগত কিহৰ ধেমালি কৰিছিলা? জানাই দেখোন মোৰ চাকৰি নাই বুলি, কিহৰ অভিনয় আছিল? তাৰ মানে মই তোমালোকৰ মা-দেউতাৰ দ্বিতীয় বিকল্প আছিলোঁ, চাকৰিয়াল ল'ৰা পোৱা বাবে এতিয়া বিকল্পৰ কাম নাই/ ঠিক আছে ,মই আহোঁ বুলি চাইকেল খন লৈ একে কোবে ঘৰ পালোহি /

ৰাতি পৰাণৰ ভাত খাবলৈ মুঠেই মন নগ'ল । মাকে বাৰে বাৰে মাতি থকাত উপাই নাপাই দুগৰাহ মান খাই উঠি আহিল। নিজৰ ৰুমত সোমাই বিচনাত পৰিল, মনত নানান কথাই আমনি দিবলৈ ধৰিলে। গোটেই ৰাতি তাৰ টোপনি নাহিল ।

কেইদিনমান পাছত পৰাণে শুনিবলৈ পালে ইভাৰ বিয়া ঠিক হ'ল বুলি । দুই এজন বন্ধুৱে ইভাৰ সতে থকা সম্পৰ্কৰ কথা জানিছিল , সেয়ে তাক কথাটো সুধিছিল। পৰাণে মনৰ মাজত থকা দুখ ঢাকিবলৈ চেষ্টা কৰি কৈছিল- ইভাৰ সতে তহঁতে ভবাৰ দৰে তেনে একো নাছিল, নহ'লেনো তাইৰ বিয়া ভাঙিবলৈ কিনো ডাঙৰ কথা।

ইভাৰ বিয়ালৈ বেছিদিন নাই। তাইৰ বিয়ালৈ বাৰু সি যাবনে নাই - চিন্তা কৰিলে, নগ'লেও বহুতে কথাটো মন কৰিব। কিন্তু কিহৰ বাবে যাব, সকলোবোৰ শেষেই হ'ল দেখোন। বিয়াৰ দিনাখন সি জৰুৰী কাম বুলি কৰবালৈ যোৱাৰ কথা ভাবিলে। পুৱাৰ জলপান খাই চাইকেল খন লৈ ওলাব লওঁতেই ভনীয়েকে চিঠি এখন আহিছে বুলি আগবঢ়াই দিলে। খুলি দেখিলে কলেজৰ প্ৰৰক্তাৰ নিযুক্তি পত্ৰ। পলমকৈ হাতত পৰিছে, ইন্টাৰভিউ দিয়া কথাটো সি পাহৰিছিলেই। যোগদানৰ অন্তিম তাৰিখ কালিলৈ। সি মনতে ভাবিলে এতিয়া ইভাৰ বিয়ালৈ যোৱাত কোনো আপত্তি নাই। চাইকেল খন চোতালতে থৈ নিজৰ ৰুমলৈ গ'ল , চিঠিখন টেবুলত থৈ অকন মান ভাবিলে- বিয়ালৈ গৈ ইভাক কথাটো কৈ জোকাৰণি এটা দিব। কেইদিনমান ধৈর্য ধৰিব নোৱাৰিলে, চাকৰিয়েই তাইৰ বাবে সর্বস্ব, প্ৰেম-ভালপোৱাৰ কোনো মূল্য নাই। তাৰ আবেগৰ সতে খেল খেলিলে।

আবেলি সাজি কাচি বিয়ালৈ যাবলৈ ওলাল। তিনিআলিৰ দোকান এখনৰ পৰা উপহাৰ এটা কিনিলে। তাৰ মন আজি সুখ আৰু দুখৰ দোমোজাত। ৰভাতলিত সোমাই তাৰ মনত পৰিল প্ৰথমবাৰ ইভাইঁতৰ ঘৰলৈ অহাৰ কথা। বিয়াঘৰত নিখিল আৰু অমিতকো লগ পাই চাকৰিৰ খবৰটো দিলে। মিঠাই কেতিয়া খুৱাবি বুলি জোৰকৈ চিঞঁৰিলে, পৰাণৰ লাজেই লাগিল ইমান জোৰকৈ ৰভাতলিত চিঞঁৰা বাবে। অকনমান আঁতৰত বান্ধৱীৰ সতে ইভাক কন্যাৰ সাজত হাঁহিমুখে বহি থকা দেখিলে, তাইৰ মুখত কোনো ধৰণৰ আপচোচ নাই। বহাৰ পৰা উঠি ইভাৰ কাষলৈ গ'ল, পৰাণক দেখি তাই তলমূৰ কৰিলে। হাঁহিমুখে উপহাৰৰ টোপোলাটো দিলে। ইভাই পাণ মচলাৰ বটাটো আগবঢ়াই দিলে। বান্ধৱী কেইজনীয়ে দৃশ্যটো দেখি অলপ অসহজ বোধ কৰিলে। পৰাণে কিবা ক'ম বুলি ভাবিও একো বিচাৰি নাপালে। বুকুত এটা যন্ত্রনা অনুভৱ কৰিলে সি । আকৌ মনতে ভাবিলে, নহয় তাইক ইমান সুখত এৰি দিব নোৱাৰি। পৰাণে লাহেকৈ ক'লে- কন্যাৰ সাজত তোমাক বৰ ধুনীয়া লাগিছে। মুখত তাইৰ আত্মগৌৰৱৰ চিন। ইভা, খবৰ এটা আছে, তোমাকে প্ৰথমতে দিও বুলি ভাবিলোঁ। কলেজত মোৰ চাকৰি হ'ল নহয়, আজি এপইন্টমেন্ট লেটাৰ পালোঁ, কালিলৈ জইন কৰিব লাগে। তাই অবাক হৈ পৰাণৰ মুখলৈ চাই ৰ'ল। তাইৰ চকুলৈ চাই কলে-যাওঁ দিয়া, কালিৰ বাবে সাজু হ'ব লাগে নহয়। মিচিকীয়া হাঁহি এটা মাৰি বিদাই ললে। শিল পৰা কপৌৰ দৰে তাই থৰ লাগি ৰ'ল।

The English Team

L to R :

Ms. Tamanna Seth
Hiyaneijemmy Das
Adella Florette Massar
Barsha Goel
Tanish Hansaria
Harsh Vardhan Keyal
Lavanya Jindal
Zaheen Rafia Shah
Ruhi Kalita
Mr. Maitreya Rajan Mahanta

The Hindi Team

L to R :

Awanya Jasrasaria
Dr. Rajesh Kumar Mishra
Mr. Prem Kumar Singh
Mr. Sanjay Kumar Dixit
Mr. Anil Kumar Yadav
Ms. Mandeep Kaur
Aditya Kumar Upadhyaya

The Assamese Team

L to R :

Aatreyee Neog
Ms. Prarthana Bora Phukan
Dr. Parinita Goswami
Kritartha Koushik

THE ASSAM VALLEY SCHOOL